

संयुक्तांक
(त्रयोदश एवं चतुर्दश)



त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
अप्रैल-जून-2000
जुलाई-सितम्बर-2000

चेतना



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) - II
बिहार एवं झारखण्ड, पटना

चेतना परिवार



बैठे हुए हैं बायें से परामर्शी श्री आर. प्रसाद, संरक्षक श्री राकेश कुमार वर्मा
एवं परामर्शी श्री खालिद बिन जमाल,
खड़े हैं बाएँ से प्रधान सम्पादक श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव
परामर्शी श्री राजेन्द्र प्रसाद मिश्र एवं सम्पादक श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर'

सत्यमेव जयते



सत्यमेव जयते

चेतना

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका
संयुक्तांक
त्रयोदश एवं चतुर्दश

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-II, बिहार एवं झारखंड, पटना का कार्यालय
महालेखाकार भवन
वीरचन्द पटेल पथ, पटना-800 001

स्वत्वाधिकार	: महालेखाकार (ले० एवं ह०) II, बिहार एवं झारखंड, पटना
प्रकाशन	: कार्यालयीय पत्रिका 'चेतना'
प्रकाशक	: महालेखाकार (ले० एवं ह०) II, बिहार एवं झारखंड, पटना का कार्यालय वीरचन्द पटेल पथ, पटना- 800 001
अंक	: संयुक्तांक (त्रयोदश एवं चतुर्दश) अप्रैल-जून एवं जुलाई-सितम्बर' 2000
मूल्य	: राजभाषा हिन्दी की मूल्य सेवा

मैं मानता हूँ कि भारत की आधुनिक भाषाओं में हिन्दी ही सच्चे अर्थ में सदैव भारतीय भाषा रही है, क्योंकि वह निरन्तर भारत की एक समग्र चेतना को वाणी देने का चेतन प्रयास करती रही है। और सभी भाषाओं में प्रदेश बोला है- कई बार बड़े प्रभावशाली ढंग से बोला है। हिन्दी में आरंभ से ही देश बोला रहा है- भले ही कभी-कभी कमजोर स्वर में भी बोला है।

-- सच्चिदानन्द वात्स्यायन

चेतना परिवार

संरक्षक

श्री राकेश कुमार वर्मा

महालेखाकार (ल० एवं ह०)-II, बिहार एवं झारखंड, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति

श्री आर० प्रसाद

वरिष्ठ उपमहालेखाकार, बिहार, पटना

श्री खालिद बिन जमाल

उपमहालेखाकार, बिहार, पटना

श्री राजेन्द्र प्रसाद मिश्र

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, बिहार, पटना।

सम्पादक मंडल

प्रधान सम्पादक

श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

सम्पादक

श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर'

वरिष्ठ लेखाकार, हिन्दी कक्ष

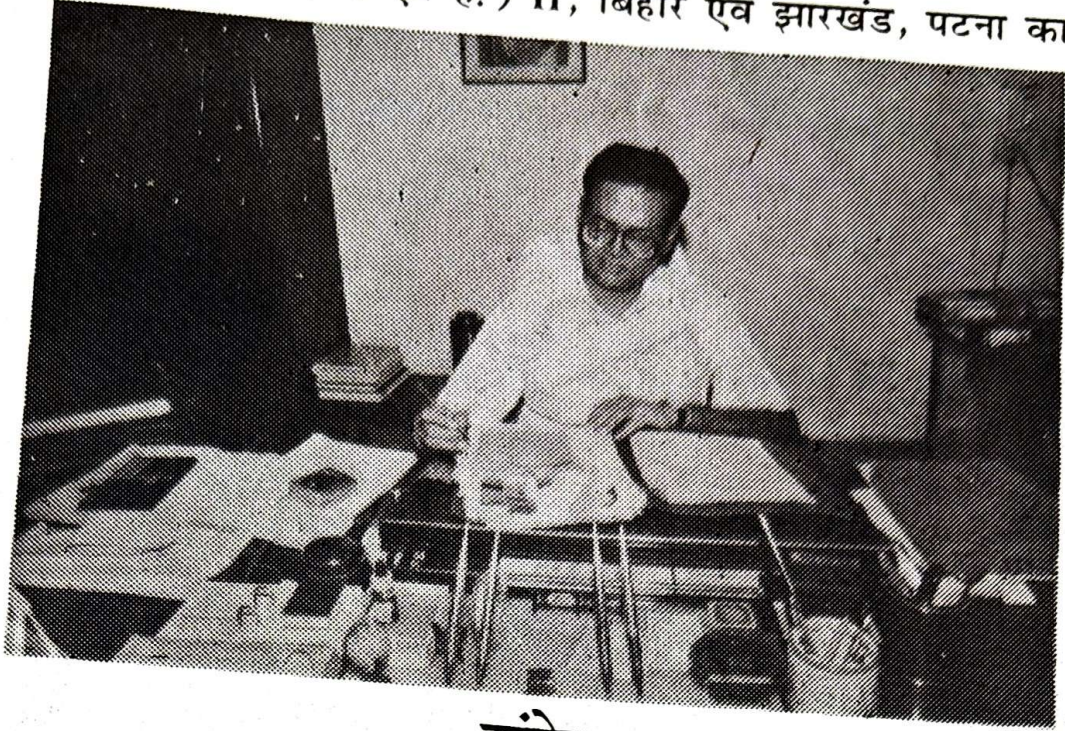
अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	रचनाएँ	रचयिता	पृष्ठ सं.
1.	चेतना परिवार			5
2.	अनुक्रमणिका			6
3.	महालेखाकार का संदेश			7
4.	वरिष्ठ उपमहालेखाकार का संदेश			8
5.	उपमहालेखाकार का संदेश			9
6.	सम्पादकीय			12
7.	आपको पत्र	लेख	श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव	14
8.	राजभाषा हिन्दी	लेख	श्री राम प्रताप सिंह 'मधुप'	17
9.	हिन्दी के पचास वर्ष और राष्ट्र	कविता	श्री रघुनाथ प्रसाद	18
10.	औकात	कहानी	श्री हरराम प्रधान	21
11.	एक मौका और	लघुकथा	श्री संजय कुमार मिश्र 'तन्हा'	22
12.	दामाद	कविता	श्री नरेंद्र कुमार सिंह 'नाहर'	24
13.	रंगदारी व आतंकवाद	निबन्ध	श्री विजय कुमार	27
14.	नयी शताब्दी में राष्ट्रीय समस्याएँ	लेख	श्री शिवशंकर तिवारी	28
15.	मौत	कविता	श्री राजू कुमार सिंह	29
16.	कौन हो तुम	निबन्ध	श्री कं.एन. शुक्ल	31
17.	जीवन			34
18.	आइए, अपनाएँ सहस्राब्दी की	लेख	श्री रणजीत कुमार सिंह	35
19.	रीढ़- कम्प्यूटर को	कविता	श्री अनिल कुमार सिंह	38
20.	हम सब एक हैं	निबन्ध	सुश्री मीनाक्षी कुमारी	40
21.	भारतीयता का स्वरूप: मेरी दृष्टि में	लघु निबन्ध	श्री बंशीधर मिश्र	42
22.	अगर	संस्मरण	श्री भगीरथ लाल दास	43
23.	आज की परिधि में रहना सीखें	कविता	श्री चन्द्रिका सिंह	
24.	जो नहीं दे सका कोई	रिपोर्ट	हिन्दी कक्ष	
25.	हिन्दी पखवाड़ा			

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से महालेखाकार कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है। ये रचनाकारों के निजी विचार हैं। साथ ही रचना की मौलिकता के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार हैं।

— प्रधान सम्पादक

महालेखाकार (ले. एवं ह.) II, बिहार एवं झारखंड, पटना का



संदेश

मुझे अपार हर्ष हो रहा है कि कार्यालयीय त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। इसके प्रकाशन पर हार्दिक बधाई।

'चेतना' हमारे कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में, हिन्दी के प्रति कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सोच एवं अभिव्यक्ति का जीवंत प्रयास है। इस पत्रिका ने राजभाषा हिन्दी के प्रति सदा सहृदय पाठकों की भी चेतना जगायी है।

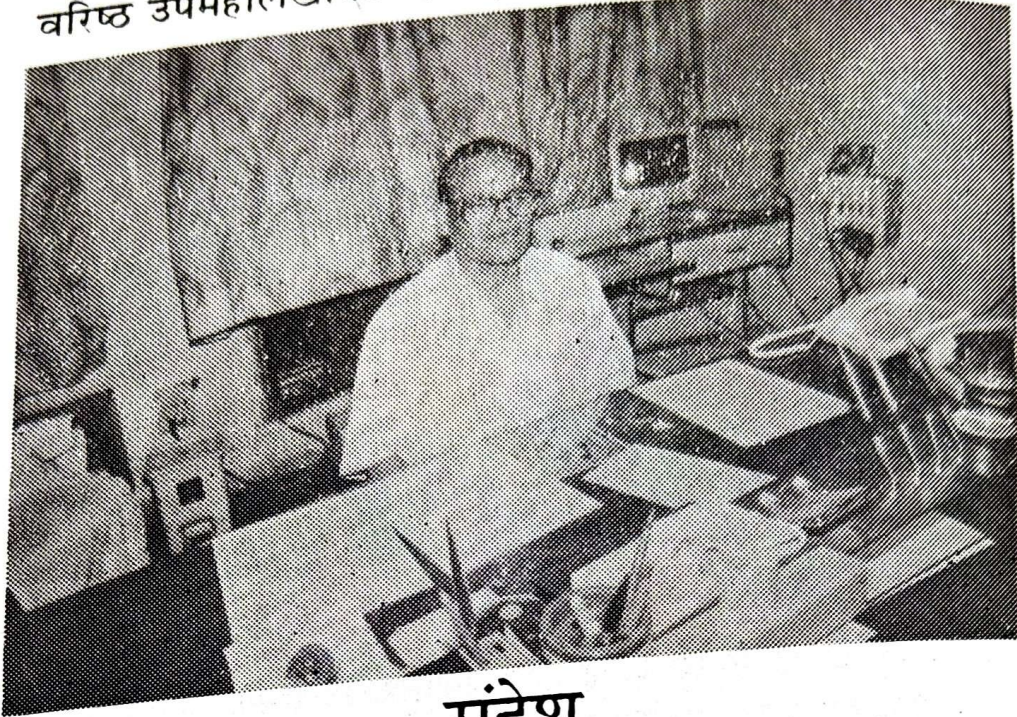
हमारे सम्मिलित सत्प्रयास का ही प्रतिफल है कि इस कार्यालय को पूर्वो क्षेत्र के अन्तर्गत राजभाषा के 'क' क्षेत्र में हिन्दी में उत्तम कार्य करने के लिए वर्ष 1998-99 में प्रथम स्थान पाने का तथा वर्ष 1999-2000 में तृतीय स्थान पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसके लिए मैं कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हिन्दी के उत्थान के लिए अनवरत प्रयत्नशील रहेगी। मैं पत्रिका के सम्पादक मंडल, रचनाकारों एवं परामर्शदातृ समिति के सदस्यों को हिन्दी के प्रति उनके अगाध प्रेम एवं अपार निष्ठा के लिए विपुल धन्यवाद देता हूँ तथा 'चेतना' के चतुर्दिक विकास की हार्दिक कामना करता हूँ।

आर० के० वर्मा

महालेखाकार (ले. एवं ह.)-II

बिहार एवं झारखंड, पटना

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (जी.ई. एवं निधि), बिहार, पटना का



संदेश

हर्ष की बात है कि 'चेतना' पत्रिका का संयुक्तांक (त्रयोदश एवं चतुर्दश) प्रकाशित होने जा रहा है। इस पत्रिका ने हिन्दी के प्रति लेखकों एवं पाठकों का रुझान सदा बढ़ाया है।

आशा है, पत्रिका का यह अंक हमारे सुधी एवं प्रेमी पाठकों को सुरुचिपूर्ण एवं जानकारीप्रद लगेगा।

अच्छी रचनाओं के लिए समस्त रचनाकारों एवं सार्थक प्रयास के लिए सम्पादक मंडल को साधुवाद देता हूँ।

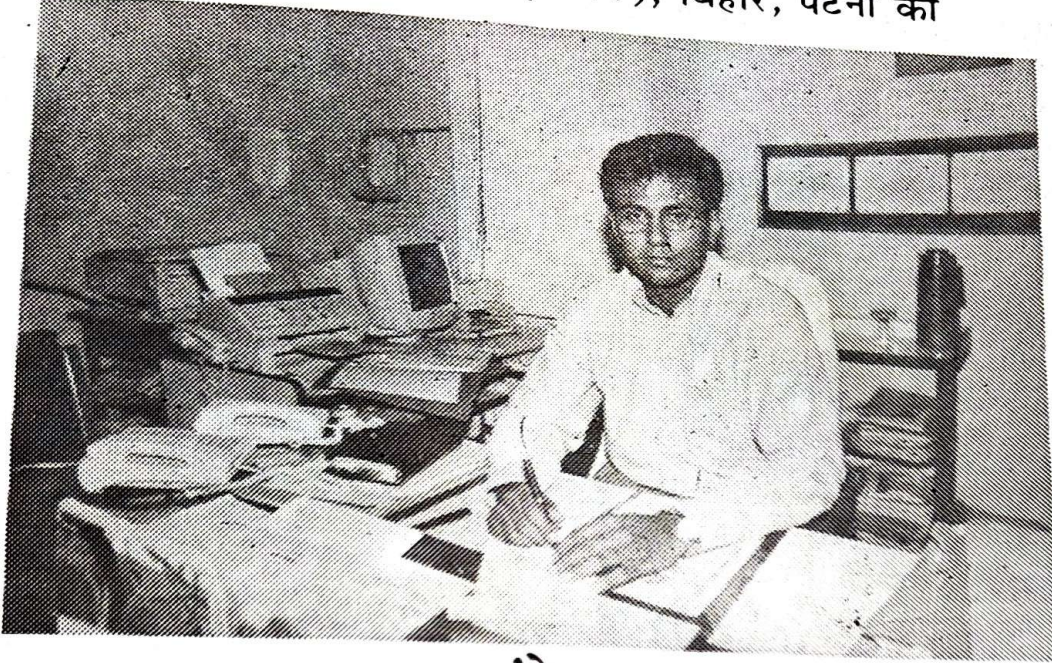
मुझे विश्वास है कि लेखक अपनी उत्तम रचनाओं से पत्रिका को अलंकृत करते रहेंगे।

रघुनाथ प्रसाद

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (जी.ई. एवं निधि)

बिहार, पटना।

उपमहालेखाकार (प्रशा एवं पेन), बिहार, पटना का



संदेश

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने एवं सृजनात्मक प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का यह संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है।

आशा करता हूँ कि यह अंक हमारे सहृदय पाठकों को रूचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक लगेगा तथा कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा भी मिलेगा।

पत्रिका के सम्पादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को कोटिशः धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पत्रिका की अविरल प्रगति का मंगल कामना।

खालिद

उपमहालेखाकार (प्रशा.एवं पेन)

बिहार, पटना।

संपादकीय

इस कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के संयुक्तांक (त्रयोदश एवं चतुर्दश) को सुधी एवं सहृदय पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। किन्हीं कारणों से 'चेतना' का तेरहवाँ अंक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। अतः यह अंक तेरहवें एवं चौदहवें अंक के संयुक्तांक के रूप में प्रस्तुत है।

राजभाषा हिन्दी के सर्वांगीण विकास के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है। इस पत्रिका ने भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के प्रचार-प्रसार में सर्वदा अपेक्षित सहयोग किया है। कार्यालय के वातावरण में सरसता लाने का इसने सतत प्रयास किया है। पत्रिका के समुन्नत विकास के लिए हम सर्वथा प्रयत्नशील हैं।

इस पत्रिका के प्रत्येक अंक को भारत के सभी महालेखाकार कार्यालयों एवं कुछ प्रसिद्ध केन्द्रीय कार्यालयों और उपक्रमों में प्रेषित किया जाता है जहाँ से पत्रिका के विषय में अभिमत प्राप्त होते हैं। प्राप्त अभिमत एवं सुझावों को यथासंभव एवं यथासाध्य हम 'आपके पत्र' के अन्तर्गत प्रकाशित करते हैं जिनसे हमें प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलती है। फलस्वरूप पत्रिका के अगले अंक में त्रुटियों को दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाता है। फिर भी यदि कतिपय त्रुटियाँ रह जाएँ तो सहृदय पाठक हमें क्षमा करेंगे। पत्रिका के सन्दर्भ में हमें सुधी पाठकों के सुझाव की अपेक्षा है, क्योंकि उनके सुझाव पत्रिका की दशा और दिशा में प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करेंगे।

अभी तक इस पत्रिका का सौभाग्य रहा है कि इसके संरक्षक हिन्दी प्रेमी रहे हैं। फलतः पत्रिका को उनका अपार स्नेह मिलता रहा है। पत्रिका के संरक्षक एवं महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा जी हिन्दी के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं। अतः मैं उनके प्रति विशेष रूप से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। परामर्शदातृ समिति के सदस्यों के प्रति भी मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ जिनके बहुमूल्य मार्गदर्शन से पत्रिका के प्रकाशन में बहुत मदद मिली है।

पत्रिका के सम्पादक श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर' को मैं साधुवाद देता हूँ जिन्होंने अपने अथक प्रयास से पत्रिका को जीवंत, ज्ञानवर्द्धक, रुचिकर एवं सौष्ठवपूर्ण बनाया है। पत्रिका के समस्त रचनाकारों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने अपनी अच्छी रचनाओं से पत्रिका को समृद्धिशाली बनाया है। यहीं पर रचनाकारों से सविनय निवेदन है कि वे ससमय और विभागीय विषयों पर रचनाएँ देने का कष्ट करें तो निर्धारित समय पर इस विभागीय पत्रिका के प्रकाशन में सहूलियत होगी।

राजभाषा हिन्दी के उन्नयन में हमारे सम्मिलित प्रयास का ही सुफल है कि इस कार्यालय का राजभाषा के 'क' क्षेत्र में पूर्वी क्षेत्र के अन्तर्गत हिन्दी में समस्त शासकीय कार्यों को निष्पादित करने में वर्ष 1998-99 में प्रथम स्थान तथा वर्ष 1999-2000 में तृतीय स्थान प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसके लिए कार्यालय के सारे अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं। अतः मैं इनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ ही पत्रिका के प्रकाशन एवं साज-सज्जा में पूर्ण सहयोग के लिए श्री अर्जित कुमार सिन्हा, स.ले. अधि. को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

जय भारत! जय हिन्दी!

ललन प्रसाद श्रीवास्तव
प्रधान सम्पादक

आपके पत्र

आपके कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का द्वादश अंक प्राप्त हुआ। राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए समर्पित इस पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएँ भावप्रेरित, मर्मस्पर्शी एवं प्रेरणाप्रद हैं। आशा है कि भविष्य में भी हिन्दी साहित्य के प्रति आपके कार्यालय की अभिरूचि इसी प्रकार बनी रहेगी और हिन्दी भाषा के उत्थान में सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका के सफल संपादन हेतु सम्पादक मंडल बधाई का पात्र है।

उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

चण्डीगढ़

23.10.2000

लेखापरीक्षा अधिकारी,

(हिन्दी कक्ष)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब
का कार्यालय।

आपके द्वारा प्रेषित 'चेतना' पत्रिका के द्वादश अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सामग्री के चयन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका की रूप-सज्जा एवं रचनाएँ राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी सुरूचि तथा सक्रियता की परिचायक हैं। निश्चय ही इससे सरकारी कामकाज के प्रति राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में सहयोग मिलता है। पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक है। राजभाषा-पुरस्कार हेतु हार्दिक बधाई। आपकी पत्रिका ने न केवल कर्मचारियों के मन-प्राण में बल्कि उच्च अधिकारियों के दिलो-दिमाग में भी हिन्दी के प्रति कलम की चेतना जागृत की है। इस हेतु बहुत-बहुत धन्यवाद।

पत्रिका हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ!

ग्वालियर

2.11.2000

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

(हिन्दी कक्ष)

महालेखाकार (ले० एवं ह०)-II मध्यप्रदेश
एवं छत्तीसगढ़ का कार्यालय

आपके कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' का द्वादश अंक प्राप्त हुआ। डॉ० खगेन्द्र ठाकुर की समीक्षा 'उपभोक्तावादी संस्कृति' बहुत ही ज्ञानवर्द्धक लगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ!

शिमला
6.11.2000

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हिमाचल प्रदेश
शिमला का कार्यालय

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीय पत्रिका 'चेतना' के बारहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में संकलित सभी सामग्री अत्यन्त रोचक, उत्कृष्ट ज्ञानवर्द्धक है। साथ ही पत्रिका में प्रकाशित महान पुरुषों की वाणी भी अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक एवं हृदय को निर्मल बनाती है।

पत्रिका के सफल प्रस्तुतीकरण हेतु रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ!

इलाहाबाद
17.11.2000

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी)
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-I, उत्तर प्रदेश
इलाहाबाद का कार्यालय

आपके कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के बारहवें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई। इसके लिए धन्यवाद।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। विशेष रूप से 'उपभोक्तावादी संस्कृति' एवं 'मानसिक रूप से ईमानदार बनें' लेख उत्कृष्ट एवं बोधगम्य हैं। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनाएँ।

नागपुर
20.11.2000

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग
महालेखाकार (ले० एवं ह०)-II महाराष्ट्र
नागपुर का कार्यालय

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के द्वादश अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए धन्यवाद।

पत्रिका में संकलित समस्त रचनाएँ ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति

पर डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का लेख इस अंक की उपलब्धि है। श्री रमा प्रसाद चक्रवर्ती की कविता 'नई शताब्दी', श्री ओम प्रकाश का लेख 'योगम् शरणं गच्छामि' एवं श्री राजबल्लभ प्रधान की कविता 'माँ की पुकार' पाठकों को आकर्षित करती है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं आगामी अंक के लिए शुभकामनाएँ!

इलाहाबाद

11.12.2000

लेखा अधिकारी (हिन्दी)

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०)-I,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, का कार्यालय

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'चेतना' के द्वादश अंक के माध्यम से कार्यालय के प्रतिभाशालियों को प्रकाश में लाने की सहायता दी है।

इसमें समाविष्ट सभी रचनाएँ सरल, सुबोध, एवं सुन्दर हैं। कर्मचारियों में हिन्दी में काम करने की इच्छा जागृत करती है। इसके लिए सम्पादक-मंडल बधाई के पात्र हैं।

रचनाकारों को धन्यवाद देते हुए पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

बंगलोर

20.12.2000

वरिष्ठ लेखापरीक्षक अधिकारी

प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-I
कर्नाटक, बंगलोर का कार्यालय

आपके कार्यालय द्वारा हिन्दी के विकास हेतु प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'चेतना' के द्वादश अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए धन्यवाद।

यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के सहयोग में एक मूल्यवान प्रयास है।

कोलकाता

23.1.2001

सहायक लेखा अधिकारी

हिन्दी सेल

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता का कार्यालय

राजभाषा हिन्दी

- श्री ललन प्रसाद श्रीवास्तव

भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को भारत संघ की राजभाषा को हिन्दी को अंगीकार किया। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी है और इसकी लिपि देवनागरी।

ज्ञातव्य है कि भारत में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाएँ एवं लिपियाँ हैं तथा अनेक बोलियाँ भी बोली जाती हैं, किन्तु इतना निर्विवाद है कि इस देश में सबसे अधिक संख्या में बोली जाने वाली भाषा हिन्दी ही है तथा इसका क्षेत्र भी अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में विस्तृत है। भारतीय राज्यों में उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली हिन्दी भाषा-भाषी राज्य हैं। इसके अतिरिक्त पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात और बंगाल ऐसे राज्य हैं जहाँ हिन्दी सम्पर्क भाषा है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि ऐसे भारतीय राज्य जहाँ के निवासी हिन्दी भाषा-भाषी नहीं भी हैं तथा उन राज्यों में अधिकांश लोग सामान्य रूप से हिन्दी नहीं भी बोलते हैं, किन्तु समझते अवश्य हैं। अतः हिन्दी को राजभाषा अंगीकार किया जाना सर्वथा उपयुक्त माना गया।

आइए, आज यहाँ हम हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, नामकरण तथा उसकी परम्परा को देखें कि आजकल जिसे हम हिन्दी कहते हैं वह किन-किन चरणों से गुजरती हुई खड़ी बोली के रूप में विकसित हुई है और इसकी विशेषता क्या है जो राजभाषा के रूप में अंगीकृत हुई।

भाषा सरिता की तरह सदा बहती रहती है, रुकना नहीं जानती। भाषा की यह स्वाभाविक प्रकृति है जो प्रत्येक देश की भाषा में देखी जा सकती है। भारत एक प्राचीन देश है और संस्कृत इस देश की सबसे पुरानी भाषा है जिसका प्रयोग प्राचीन ऋषियों द्वारा किया जाता था। संस्कृत भाषा का प्राचीनतम रूप ऋग्वेद जिसे विश्व की सर्वप्रथम कृति माना जाता है, देखने को मिलता है। संस्कृत को लोग आर्यभाषा या देवभाषा भी कहते हैं। हिन्दी इसी आर्यभाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी है। किन्तु हिन्दी पर संस्कृत के अतिरिक्त द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाओं का भी प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इसका कारण यह है कि सैकड़ों वर्षों तक इन दोनों भाषाओं को एक ही संस्कृति में फलना-फूलना पड़ा। भाषा सरिता की तरह सदा बहती रहती है। जिस तरह नदी अपने बहाव के आवेग में आने वाले अन्य पदार्थों को समेट कर समाहित कर लेती है, भाषा भी जिसकी धारा नदी की तरह ही चंचल है, अपने बहाव के आवेग में अन्य भाषायें जिनके सम्पर्क में वह आती है उनमें से कुछ को अपने में समाहित कर लेती है। हिन्दी के साथ भी ऐसा ही हुआ। अपने उद्गम आर्यभाषा संस्कृत से निकली हिन्दी अपने विकास के क्रम में अन्य भारतीय भाषा परिवारों की भाषाओं-बोलियों को समाहित करती गई जिसका उदाहरण है कि हिन्दी को उर्दू के

माध्यम से अरबी एवं फरसी शब्दों का प्रचुर भण्डार मिला। अंग्रेजी के शब्दों एवं वाक्य-रूपों ने भी हिन्दी को प्रभावित किया। इसे दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि निरन्तर सम्पर्क एवं समान संस्कृति के बीच फलने-फूलने वाली भाषायें एक दूसरे को प्रभावित करती रही हैं तब हिन्दी इसका अपवाद कैसे हो सकती थी।

हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान— ये शब्द संस्कृत के नहीं बल्कि फारसी के हैं। हिन्दी भाषा का जन्म उत्तरभारत में हुआ किन्तु उसका नामकरण ईरानियों और भारत के मुसलमानों ने किया। ईरानियों की प्राचीनतम धर्मपुस्तक 'अवेस्ता' में 'हिन्दी' 'हिन्दू' आदि शब्द पाये जाते हैं। वस्तुतः हिन्दी किसी सम्प्रदाय, जाति या धर्म विशेष की भाषा नहीं है बल्कि इस पर सभी देशवासियों का समान अधिकार है।

हिन्दी खड़ी बोली का विकसित रूप है जिसका विकास उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ है। भारत में अंग्रेजों के आगमन के पूर्व लगभग 14वीं शताब्दी में ही अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में पहेलियाँ रचकर साहित्य लेखन का प्रारम्भ कर दिया था जिस परम्परा को आगे भी कायम रखते हुए हिन्दी के सुप्रसिद्ध निबन्धकारों एवं कवियों ने समय-समय पर अपने विचारों से हिन्दी-साहित्य को समृद्ध किया।

हिन्दी जो आर्यभाषा या देवभाषा संस्कृत की उत्तराधिकारिणी बनी उसे उसके विकास के क्रम में देखें तो पायेंगे कि भारतीय भाषा के इतिहास में 500 ई० से 1000 ई० तक का काल जो अपभ्रंशकाल के नाम से जाना जाता है, आधुनिक आर्य भाषाओं यथा हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी, पंजाबी, उर्दू आदि की उत्पत्ति इन्हीं अपभ्रंशकाल में अपभ्रंशों से हुई। हिन्दी का जन्म वस्तुतः संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश के योग से ही हुआ। जब 1100 ई० के आसपास अपभ्रंश काल समाप्त हो गया और इसके पश्चात आधुनिक भाषाओं का युग आरम्भ हुआ तब 14वीं शताब्दी के लगभग आधुनिक भाषाओं का स्पष्ट रूप सामने आया। उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी में ऐसे कारण उत्पन्न होने लगे जिसके कारण खड़ी बोली का विकास स्वतः प्रशस्त होता गया। हिन्दी उस समय तक केवल जन-सम्पर्क की सशक्त भाषा नहीं थी बल्कि ज्ञान-विज्ञान को भी समेटे हुई थी। फलतः अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में हिन्दी अग्रणी बन चुकी थी। राजनीतिक चेतना का उदय, पत्र-पत्रिकाओं का प्रचार एवं प्रसार, जन-जागरण का वातावरण तथा बहुसंख्यक समाज में स्थापित हिन्दी की खड़ी बोली देश भर में फैल चुकी और राष्ट्रीय एकता का पर्याय बन गई। हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में जहाँ एक ओर भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद और 'दिनकर' प्रभृति कवियों एवं मुंशी प्रेमचंद, वात्स्यायन, अज्ञेय आदि उपन्यासकारों/कहानीकारों ने योगदान दिया वहीं दूसरी ओर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वान निबन्ध एवं व्याकरण के क्षेत्र में हिन्दी भाषा साहित्य को सतत समृद्ध करते रहे। परिणामस्वरूप 1949 ई. में संविधान में हिन्दी को राजभाषा का गौरवशाली सम्मान प्रदान किया गया।

हिन्दी किसी के गिटाने से गिट नहीं सकती। — चन्द्रबली पांडेय

हिन्दी के पचास वर्ष और राष्ट्र

- श्री राम प्रताप सिंह 'मधुप'

भारत में गणतंत्रीय व्यवस्था के साथ-साथ हिन्दी और राष्ट्र दोनों ने पचास वर्ष पूर्ण कर लिये हैं। भारत में प्रजातांत्रिक व्यवस्था की स्थापना में जन-मानस के साहसिक संघर्ष का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत एक राष्ट्र के रूप में कभी-भी नहीं रहा है। विभिन्न भौगोलिक वातावरण में, अलग-अलग संस्कृतियाँ लिये हुए, भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाला भारत अपनी राजनीतिक चेतना में संकुचित विचार रखने के कारण, विदेशियों के प्रहार के आगे झुकता एवं टूटता रहा है। भारतीयों की इसी सोच के डाक-हूण-मुगल, पठान आदि जातियों ने इस पर शासन किया तथा इसे अपना निवास स्थान बना लिया था। परतंत्रता की अन्तिम कड़ी में अंग्रेजों की गुलामी आयी जो देश पर लगभग दो सौ वर्षों तक छाई रही। अंग्रेजों के शासन काल में ही देश में भौगोलिक एकता का स्वरूप उदित हुआ जो सम्पूर्ण भारत को एक तस्वीर के रूप में विश्वमान चित्र पर दिखी।

सम्पूर्ण विश्व में जब नव जागरण का उद्घोष होने लगा तो इसका लाभ परतंत्र भारत को भी मिला और भारतीयों ने भी राष्ट्रीय सोच की दिशा बढ़ानी प्रारम्भ कर दी। भाषा एवं विभिन्न संस्कृतियों में बंधे लोग सम्पूर्ण देश को एक राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित करने हेतु एक माध्यम की तलाश करने लगे जो सम्पूर्ण जन मानस को एक सूत्र में बाँध कर आजादी की लड़ाई की भावना को एक राष्ट्र के रूप में विकसित कर अंग्रेजों से सत्ता हस्तान्तरित करने का प्रारम्भिक प्रयास था। इसी सोच में खड़ी बोली का माध्यम प्रारम्भ हुआ।

वस्तुतः भारत में राष्ट्रीयता की भावना के उदय की धुरी 'हिन्दी' ही बनी। 'हिन्दी' का उदय खड़ी बोली से हुआ और खड़ी बोली ने ही राष्ट्रीय चेतना को जगाकर सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बाँधने का काम प्रारम्भ किया। सुदूर प्रान्तों के नवजवान हिन्दी सम्वादों को आत्मसात कर एक जगह से दूसरी जगह फैलाने लगे। आजादी की लड़ाई इतनी शक्तिशाली हुई कि अंग्रेजों को देश छोड़कर जाना पड़ा।

भारत में गणतंत्रात्मक सार्वभौम राष्ट्र की स्थापना हुई। अपना देश, अपना राष्ट्र और अपने शासन का प्रारम्भ हुआ। जब तक आजादी की लड़ाई होती रही हिन्दी अपनी सारी शक्तियों से भारत के सम्पूर्ण जनमानस पर आधिपत्य कायम कर चुकी थी। आजादी के अन्तिम क्षण में जब देश दो टुकड़ों में बँट गया तो धर्म एवं भाषा के विवाद की राजनीति देश में प्रारम्भ हो गयी। जिस हिन्दी को जानने के लिए सुदूर प्रान्तों के नवजवानों ने दिल से प्यार किया था वही लोगों ने राजनीति के घृणित इशारों पर हिन्दी का विरोध प्रारम्भ कर दिया। स्वतंत्र भारत की 'राष्ट्रभाषा' जो हिन्दी को होनी थी उसके विरोध में राजनीतिक दुर्भावनायें अपना रंग दिखाने

लगीं।

संविधान में किया गया प्रावधान की हर दस वर्षों पर देश समीक्षा करेगा कि हिन्दी राजभाषा बन सकती है या उसे देश के सामने अपनी सार्थकता प्रमाणित करने हेतु लगातार प्रयासरत रहना होगा। हिन्दी राजभाषा के रूप में निरंतर गतिमान है और देश के सम्पूर्ण भूभाग पर अपनी पकड़ मजबूत बनाती जा रही है। संविधान के प्रावधान को बदलना अब सम्भव नहीं दीखता है क्योंकि सम्पूर्ण राष्ट्र की सोच राष्ट्रीय स्तर से उत्तरोत्तर प्रान्तीय स्तर पर स्थिर नजर आने लगी है। लोग राष्ट्र की कल्पना पहले नहीं करते बल्कि प्रान्तीयता की भावना अधिक सक्रिय होती नजर आ रही है। देश का जनमानस, एक राष्ट्र, एक भाषा एवं एक संविधान की बात पर अपनी सोच को केन्द्रित नहीं कर रहा है।

बीमार होती भारतीय मानसिकता से शक्तिशाली सार्वभौम राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता है। भारत को पूर्ण राष्ट्र बनाने के लिए, 'हिन्दी' को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का संकल्प लेना हम भारत के नागरिकों का परम कर्तव्य है। हिन्दी के बिना भारत का वह रूप जिसने आजादी की लड़ाई में सिरकत की थी तथा वह शक्ति जिसने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया था तथा वे भावनाएँ जो स्वदेशी बनाम विदेशी का राग अलापती थी उन्हें देश के मानस पटल पर पुनः लाना सम्भव नहीं है।

'हिन्दी' आजादी की लड़ाई के पूर्व से ही जनमानस को जिस प्रकार प्रशिक्षित करती आयी है तथा भारत को एक राष्ट्र के रूप में पदस्थापित करने में सतत् प्रयत्नशील है वह कोई अन्य भाषा सम्पूर्ण देश को नहीं जोड़ सकती है।

'हिन्दी' भाषा में सुगमता है, माधुर्य है और है वह चमत्कार जो अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में आत्मसात कर लेती है। आज राजभाषा के रूप में हिन्दी इस कदर अपनी अन्तरशक्ति बिखेर रही है और दे रही है जिसके पावन झोकों में भारतीय गणतंत्र की प्रशासनिक व्यवस्था विश्व राजनीति को एक संदेश दे रही है कि हिन्दी के बल पर भारत एक इस प्रकार का राष्ट्र बनेगा जो आने वाली सदी की अगुआई करेगा तथा उन संकटों पर विजय प्राप्त कर लेगा जो संकुचित मनोवृत्ति के कारण हिन्दी की आलोचना करते हैं।

राष्ट्रीय एकता का प्रतीक हिन्दी आज अपनी सतत् ऊर्जा से इन निष्प्राण नागरिकों में भी राष्ट्रीय चेतना का विकास करती जा रही है जिसे देख कर लगता है कि राष्ट्र हिन्दी के बिना नहीं चल सकता है। यह तो संजीवनी है जिसके रसास्वादन से संपोषित मानव, विश्व राजनीति को सदा अनुप्राणित करता रहेगा।

भारतीय राजनीतिक परिवेशों पर ध्यानाकर्षण से यह स्पष्ट होता जा रहा है कि तमिलनाडु (मद्रास) से कश्मीर तक, बंगाल से बंगलोर तक के राजनेता हिन्दी भाषा के प्रयोग के बल पर ही राष्ट्रीय नेता बनने की लालसा पालते हैं। यदि कोई राजनेता 'हिन्दी' बोलना,

पढ़ना नहीं जनता है तो वह अपने को अधूरा मानता है तथा भारत का प्रतिनिधित्व करने का हकदार भी नहीं समझता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संविधान में पूर्णरूपेण घोषित नहीं होने के बाद भी 'हिन्दी' देश की राष्ट्रभाषा है और देश, राष्ट्र के रूप में तब-तक शक्तिशाली नहीं हो सकता जब तक 'हिन्दी' को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित नहीं किया जाता है। सभी राजनेता इस तथ्य को जानते हैं कि हिन्दी ही एक मात्र भाषा है भारत की जो विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, जातियों में बिखरे भारतीयों को एक सूत्र में बाँधने की सदा राष्ट्रीयता की सोच को बढ़ाते हुए सार्वभौम राष्ट्र के रूप में विश्व राजनीति के रंगमंच पर प्रतिष्ठित रख सकती है। हिन्दी और राष्ट्र दोनों भारतीय राजनीतिक दर्शन में एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है। राष्ट्र को हिन्दी चाहिए और हिन्दी को सम्पूर्ण भारतीय परिवेश।

इस प्रकार हिन्दी के पचास वर्षों के प्रयास, जिसके द्वारा सम्पूर्ण भारत का कोना-कोना एक दूसरे से परिचित हुआ तथा सभी प्रान्तों के नागरिकों ने हिन्दी को 'राष्ट्र भाषा' मान कर इससे परिचित होना प्रारम्भ किया है तथा अपनी सोच में 'हिन्दी के बिना भारत की कल्पना नहीं, को उतारा है।

सरकारी कार्यों में लगे हुए पदाधिकारी या कर्मचारी चाहे वे किसी भी भाषा या धर्म के मानने वाले हों, हिन्दी को अपने हृदय में स्थान दिया है तथा सभी कार्यों का निष्पादन हिन्दी में करने की कुशलता प्राप्त की है। इससे लगता है कि नई सदी में हिन्दी एवं भारत राष्ट्र दोनों विश्व में स्थान प्राप्त कर विश्व मानव के प्रणेता बनेंगे।

हिन्दी पर अपनी एक कविता की कुछ पंक्तियों के साथ मैं अपना लेख समाप्त करता हूँ।

“भारत अपना राष्ट्र अगर है,
हिन्दी तेरी भारती।
जन-जन के इस परम गंग की
सदा उतारो आरती।”

छिठ्ठी शतवर्ष के हृदय-देश में स्थित कनोड़ों जन-मानियों
के हृदय और मस्तिष्क को नवुनाक देने वाली भाषा है।

— डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

चेतना औकात

तीन हाथ का
यह जीता-जागता पुतला
अपनी भावनात्मक
संजीदगी में
आकाश की ऊँचाइयों को
भी छूने की
तमन्ना रखता है।

— श्री रघुनाथ प्रसाद
वरिष्ठ उपमहालेखाकर

अपने दुःसाहसिक कार्यों से
वह दिखा देगा
दुनिया को
कि वह भी कुछ कर सकता है
किन्तु प्रश्न है,
क्या वह इतनी आसानी से
अपनी कल्पनाओं को मूर्त रूप दे सकेगा
तथा उसके सपने साकार होंगे?
हाँ, होंगे
किन्तु विरले
जिनकी भावना में
कर्तव्यपरायणता होगी
कठिनाइयों से जूझ
आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति होगी।

इच्छाशक्ति, दृढ़ता और आत्मविश्वास हो
तो मानव संसार की सारी कठिनाइयों
को पार कर लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।
संदर्भ में मानव ऊँची, गगनचुम्बी,
कठिनाइयों तले
कितना असहाय एवं लघुकाय लगता
जैसे ऊँचे पहाड़ तले
सबसे बड़े जानवर/ऊँट की बिसात लगता।

एक मौका और

श्री हरेराम प्रधान
वरिष्ठ लेखक

रामू मिस्त्री सभी प्रकार की मरम्मत का कार्य जानता था। चूल्हा की मरम्मत से लेकर बिजली के दूटे स्वीच को भी ठीक करता था, यहाँ तक कि शादी-ब्याह एवं अन्य उत्सवों में खाना बनाने का कार्य भी करने में हिचकिचाता नहीं था। इन सारे कार्यों को करने के फलस्वरूप उसे पैसा मिले या न मिले, परन्तु दारू का इन्तजाम अवश्य होना चाहिए, तभी कार्य को सुचारू रूप से करने में मन लगाता था। खाने की चिन्ता नहीं रहती थी। दारू से उसे इतना लगाव हो गया था कि घर में पत्नी भूखी है, इसकी भी उसे चिन्ता नहीं रहती थी। बस दारू की चिन्ता उसे सताती रहती थी।

रामू मिस्त्री की पत्नी कुन्ती और रामू में अक्सरहाँ दारू के सवाल पर झगड़ा हो जाता करता था। कुछ देर के लिए तो कसम भी खाता था कि अब आगे से इतना अधिक दारू नहीं पीऊँगा; परन्तु जैसे ही घर से बाहर काम करने जाता था, शाम को दारू का 'पाउच' लेकर ही लौटता था, तथा खाने का सामान लाना भूल जाता था। पत्नी दुकानदार से हाथ-पैर पड़कर इस शर्त पर सामान उधार लाती थी कि दो-चार दिनों में पैसा दिला दूँगी, परन्तु वह ऐसा नहीं कर पाती थी। कभी-कभी तो दुकानदार सामान उधार देना बन्द कर देता था, तब दोनों को भूखे सोना पड़ता था। इसके बावजूद रामू की आदत नहीं सुधरती थी। वह अपनी आदत से लाचार था। कभी-कभी तो उसकी आदत सुधारने हेतु दुकानदार उसकी औरत कुन्ती को इस शर्त के आधार पर राशन उधार देता था कि तुम खाना बनाकर अकेले खाना और रामू को खाना मत देना। इसीलिए नहीं कि रामू से दुकानदार को नफरत थी, बल्कि इसलिए कि वह पैसा कमाकर लावे और उसके राशन का पैसा चुका दे। कुन्ती राशन लाती थी और कभी-कभी अकेले खाना बनाकर रामू को दिये बिना खाती थी पर उसका मन खाने में नहीं लगता था, परन्तु दुकानदार का डर था कि कहीं वह रामू को खाना देते देख न ले, इस डर से वह रामू को खाना नहीं देती थी। जब खाना बनकर तैयार होता था, तो रामू बच्चों की तरह ललचाई निगाह से खाना को देखता था और जब उससे रहा नहीं जाता तो कुन्ती से कहता कि थोड़ा हमको भी खाना दो न। दुकानदार से डरते-सहमते कभी-कभी कुन्ती रामू को थोड़ा खाना दे देती थी। पर दुकानदार को जैसे ही पता चलता था कि खाना रामू को भी मिला है तो कुन्ती को वह बहुत डाँटता था। दुकानदार से रामू ही कहता था कि कुन्ती ने हमें खाना दिया है, क्योंकि जब दारू उसको चढ़ती थी, तब सब बात दुकानदार से वह कह देता था। कुन्ती और रामू में झगड़ा होता था तो दुकानदार ही उसे सुलझाया करता था। दुकानदार की बात दोनों मानते थे। माने भी क्यों नहीं, राशन जो उधार देता था।

रामू का दोस्त या गार्जियन जो भी था दुकानदार ही था। रामू को किराये पर घर दुकानदार

ने ही दिलाया था। किराया देने में जब देर कर देता था तब मकान मालिक मकान खाली करने के लिए कहते थे, तो एक-दो महीने की मुहलत लेकर पुनः रह जाता था और किराये को आगे बढ़ाते चला जाता था। दुकानदार के कहने पर मकान मालिक उसे घर में रहने देते थे, इस शर्त पर कि पैसा जल्द दे देना है तथा कुन्ती के साथ लड़ाई-झगड़ा नहीं करना है। उसे खाना तथा कपड़ा देना है। दारू घर में नहीं पीना है और किसी के साथ मारपीट नहीं करनी है। रामू यदि रखे रहता था और माँगने पर ऐसा बहाना बना देता था कि विश्वास हो जाता था कि सही कह रहा है; परन्तु बाद में पता चलता था कि उसने झूठ बोला था। बात वैसी नहीं थी जैसा कि पहले उसने कहा था।

दशहरा का त्योहार नजदीक था। दशहरा में वह मूर्ति बेचने का काम भी करता था। मकान मालिक का किराया बाकी था। इधर-उधर से थोड़ा बहुत जो पैसा उसने जमा किया था उसी से मूर्ति खरीदता था। अतः मकान मालिक के पास जाकर हाथ जोड़कर विनती के स्वर में उसने कहा "चाचा जी एक मौका हमको सुधरने का दीजिये।" हम मूर्ति बेचकर आपका पैसा चुका देंगे। मकान मालिक उससे बोले कि ठीक है, पर दशहरा के बाद पैसा अवश्य दे देना। रामू चला गया आमदनी हुई पर उसे तो दारू की लत लगी हुई थी। उसने बहुत सारे पैसे दारू में खर्च कर दिये। एक सप्ताह तक रामू घर नहीं आता। वह दुकान चलाता और उसी जगह खाना खाता और दारू पीकर मस्त रहता था, उसे पैसा देने की भी चिन्ता नहीं थी। यह भी वह भूल गया था कि घर में उसकी पत्नी कुन्ती भी है, जो उसकी राह देखती होगी। एक सप्ताह बाद वह घर आया। मकान मालिक के पास आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था, क्योंकि जो पैसा कमाया था, उसका दारू पी गया था और कुछ रखा था दिवाली में मूर्ति खरीदने के लिए। दुकानदार दोस्त के कहने पर था, सिर्फ माथा नीचे झुकाये हुए था। दुकानदार ने उससे कहा कि बोलिये, क्या कहना चाहते हैं। मालिक को सही-सही बता दीजिये। तब उसने कहा-"चाचाजी कुछ पैसा चोरी हो गया, कुछ जचा है, उससे लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति खरीदनी है तथा दिवाली में दुकान सजानी है। जब पूँजी ही आपको दे देंगे तो, मूर्ति कैसे लायेंगे? इसलिए अबकी बार मौका दीजिये। दिवाली में मूर्ति बेचकर आपका सब पैसा चुका देंगे। दुकानदार ने भी कहा कि इस बार मौका दे दीजिये। सब पैसा जोड़कर ये दिवाली के दो-तीन दिन बाद दे देंगे। मकान मालिक सीधा-सादा आदमी था। उनकी बातों में आकर बोले-"जाओ मूर्ति लाओ और दुकान सजाओ। परन्तु अबकी बार पैसा दे देना। फिर धोखा मत देना। तुम्हारे ऊपर से विश्वास उठ रहा है।"

रामू ने दिवाली में लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति खरीदकर अपनी दुकान सजायी। दुकान अच्छी चली और मुनाफा भी काफी हुआ। दारू का दौर भी चला, क्योंकि दारू के बिना तो उसका सब

काम अधूरा रहता था। दिवाली का त्योहार बीत गया। तीन-चार दिन के पश्चात् भी रामू घर पर नहीं आया। एक-दो दिन उसकी पत्नी खाना लेकर उसके पास गई थी, परन्तु रामू ने उससे भाँह बात भी नहीं की। एक दिन तो उससे भेंट भी नहीं हुई, पर उसकी जानकारी मकान मालिक को नहीं होने दी गई। दूसरे दिन रामू का दुकानदार दोस्त उसका पता लगाने गया कि कहाँ चला गया, कहाँ रहता है, घर पर भी नहीं आता है। वह जहाँ पर दुकान लगाता था, उसके अगल-बगल वाले लोगों से पूछा तो पता चला कि दो दिनों से दुकान पर नहीं आता है। पता नहीं, कहाँ चला गया, कहाँ रहता है? किसी तरह दुकानदार दोस्त ने उसे खोज निकाला और अपने साथ उसे घर लाया। इस बार भी रामू ने तिकड़मबाजी की और पैसा इधर-उधर कर दिया। मकान मालिक के पास आने से कतराने लगा। जब रात को सभी लोग सो जाते थे तब चुपके से आता था और सब लोगों के जगने के पहले उठकर चला जाता था। मकान मालिक से उसने न तो भेंट की और न ही पैसा दिया। इसी बीच छठ पर्व आ गया। मकान मालिक अपनी पत्नी के साथ अपने पैतृक गाँव छठ करने चले गये। गाँव पर ही उन्होंने अखबार में पढ़ा कि उनके मुहल्ला में एक आदमी मर गया है। यह खबर पढ़कर मकान मालिक का माथा ठनका। सोचने लगे कहीं रामू ही तो नहीं था। तीन-चार दिन घर पर ठहरने का मन था, पर रामू के बारे में आशंका उत्पन्न हो गई। अतः दूसरे दिन ही पटना चले आये। आने पर रास्ते में ही यह समाचार सुनकर मन में तसल्ली हुई कि खैनी बेचने वाला दारू पीकर मर गया है। खैर, रामू सही सलामत है, यह जानकर मन खुश हुआ, पर चिन्ता की बात यह थी कि अभी तक उसने मकान मालिक से भेंट नहीं की थी। दुकानदार दोस्त के समझाने-बुझाने पर उसके साथ मकान मालिक के पास आया और मुँह लटकाये खड़ा रहा। मकान मालिक के कहने पर किसी तरह कुर्सी पर बैठा। मकान मालिक ने पूछा कि दिवाली कौन कहे अब तो छठ भी बीत गया, परन्तु अभी तक तुमने अपना वादा पूरा नहीं किया, यानी पैसा नहीं दिया। मुँह नीचे किये किसी तरह अपने आपको सँभालते हुए रामू ने कहा— “चाचा जी पैसा सब जुआ में हम हार गये।” इतना कहना था कि गुस्से में मकान मालिक का हाथ उठ गया और एक तमाचा उसके गाल पर जड़ते हुए बोले कि पहले तो तुम दारू ही पीता था अब जुआ भी खेलने लगा। तुम सँभल जाओ, अन्यथा दूसरा उपाय करना पड़ेगा। इतना सुनना था कि रामू ने पुनः हाथ जोड़कर विनती के स्वर में कहा— “एक मौका और दे दीजिये, चाचा जी।” मकान मालिक ने कहा कि तुम्हारा एक मौका कितने बार का होता है। मेरी समझ में नहीं आता है। रामू की दीन-हीन दशा पर तो मुझे तरस नहीं आया किन्तु उसके बगल में खड़ी उसकी पत्नी की आँखों में आँसू और बेबसी को देखकर मैं नरम पड़ गया।

पढ़कर आनन्द के अतिरेक से आँखें यदि गीली न हो जायें तो वह कहानी कैसी?
- शरतचन्द्र

दामाद

श्री संजय कुमार मिश्र 'तन्हा'
लिपिक, टाईपिंग पूल

हर माँ-बाप की तरह वर्तमान परिस्थिति एवं परिवेश का ख्याल करते हुए वे दोनों भी अपनी पुत्री के भविष्य को लेकर चिंतित थे और ऐसे में हर पुरोहित की तरह इनके बस लड़के को देखना था और उसकी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को जानना था। अब तो वे उस लड़के के घर पहुँच गए। लड़का अच्छा-खासा खाते-पीते घर का था और सरकारी अफसर था। उसे भी लड़की पसंद थी, जो किसी कॉलेज में लेक्चरर थी।

होने वाले ससुर ने होने वाले दामाद को प्रभावित और संतुष्ट देखा तो सोचा कि अब आखिरी बात भी तय कर लेनी चाहिए। सो बोले— “बेटा, अब थोड़ी लेन-देन की भी बात हो जाए। जो भी इच्छा हो निःसंकोच कहो। हम भी अपनी शक्ति और तुम्हारी इच्छा के अनुसार उसे पूरा करने की कोशिश करेंगे।”

लड़का यह सुनते ही बीमार-सा दिखने लगा। उसने गले पर हाथ फेरा, बायीं कलाई को दाहिने हाथ से मरोड़ा, दोनों हाथों की एक-एक ऊँगली चटकाई, पैरों को दबाया और आंखें मलने लगा जैसे बहुत थक गया हो। फिर एक अंगुली उठाते हुए कहा, “मुझे एक बजे बैंक पहुँचना है।” अंत में उसने लड़की को ऊपर से नीचे तक देखा और बोला, “बाबूजी, मुझे और कुछ नहीं चाहिए, अब मैं चलता हूँ।” वह नमस्कार कह चल दिया।

ससुर साहब उसके स्वभाव से गदगद हो पत्नी से बोले, “ऐसा लड़का बड़े भाग्य से मिलता है। दहेज का नाम सुनते ही जैसे उसकी तबियत खराब हो गई। सिर्फ लड़की को देखकर बोला— “मुझे कुछ नहीं चाहिए। बड़ा नेक लड़का है।”

इतना सुनते ही पत्नी जी भभक उठीं, “अरे, जिसके करम फूटे हों, उसे ही ऐसा दामाद मिले। तुम्हारी आंखों पर तो पर्दा पड़ा है। देखा नहीं, मुए ने कितनी चालाकी से सब कुछ मांग लिया। गले पर हाथ फेर कर सोने की चेन मांगी, बाईं कलाई मरोड़कर घड़ी मांगी, ऊँगलियाँ चटका अंगूठी मांगी, पैर दबा गाड़ी मांगी और आंखें मलकर टी.वी. भी मांग ली। नासपीट्टे को इतने से भी संतोष नहीं हुआ तो एक अंगुली उठाकर एक लाख रुपये की भी फरमाईश कर दी....।

पतिदेव भौचक्के-से अपने होने वाले दामाद के सुंदर अर्थपूर्ण विश्लेषण सुन रहे थे। और उसने तुम्हारी बेटा को ऊपर से नीचे तक नहीं देखा, बल्कि उसे गहनों से लादकर भेजने की मांग कर रहा था, आग लगे ऐसे दामाद को।”

पतिदेव यानी ससुर जी अब सुनने की स्थिति में नहीं थे और सोफे पर बेसुध हो लुढ़क गए।

रंगदारी व आतंकवाद

— श्री नरेन्द्र कुमार सिंह 'नाहर'

तेरह मई, सन् दो हजार
दिन था शनिवार
बनवा रहा था घर-बार
जब हुआ था मैं रंगदारी का शिकार।

अचानक आया रंगदारों का फैक्स,
जल्दी से दे दो रंगदारी टैक्स।
पैसे लाओ नहीं तो मार देंगे गोली
जिसने पैसे दिये उसने जान बचा ली,
मैंने पैसे नहीं दिये तो गोली खा ली।

अस्पताल में जखमी पड़ा था बदहाल
देखने आये थे श्री अरूण औ' श्री नंदलाल
खबर मिलते ही दौड़े-दौड़े आये श्री खालिद
बगल में बैठे थे मेरे पूजनीय वालिद
तब तक न हुआ था अपराधी गिरफ्तार
उबल पड़े थे हमारे दोनों माननीय महालेखाकार
कैसे भूल सकता हूँ मैं उनका असीम प्यार।
मित्रों ने भी मेरी कम मदद नहीं की,
तहेदिल से हूँ मैं उन सबों का शुक्रगुजार।

क्या हमें रंगदारी दे देनी चाहिए
या रंगदारों की गोली खानी चाहिए?
सवाल उसूलों का है,
अस्तित्व, अस्मिता औ' मानव-मूल्यों की रक्षा का है?

कैसी दुर्दशा है?
तड़प रही है दुनिया सारी
फल-फूल रहा है आतंकवाद औ' रंगदारी
सिसक रही है मानवता बेचारी
निर्भय घूम रहा है व्यभिचारी।
हिंसा की तपिश में तप रहे हैं सेनारी औ' तरारी
अपहृत होती कन्या कुँवारी।
मानवता का करुण क्रन्दन,
ताल ठोंक रहा दस्यु चन्दन।

समस्त विश्व आतंकवाद की
अग्नि में धू-धू कर जल रहा है।
बल ताल ठोंक रहा है,
शील कपाल धुन रहा है।
दानव खून कर रहा है,
मानव निर्निमेष निहार रहा है।

कैसी लीला है तेरी भगवन,
राम के साथ क्यों बनाया रावण?
दिन-दहाड़े होता है मनुजों का दमन,
रंगदारों और आतंकियों का होता नमन
कोई नहीं करता इनका शमन।

क्या होगी गत मानवता की,
जहाँ नंगा नाच है दानवता का?
पिस्तौल की नोंक औ' बन्दूक की संगीन पर
विमान अपहरण किये जाते हैं,
सरेआम दुकानें लूटी जाती हैं,
दिन-दहाड़े नरसंहार किया जाता है,
नारियों की इज्जत लूटी जाती है।
आखिर, इस लूट को किसने दे रखी है छूट,
इस लूट औ' हिंसा की लपेट में कौन रहा है टूट?

यह कितना बड़ा अत्याचार है?
जान और सम्पत्ति हमारी,
अधिकार आतंकवादियों का
सदाचार हमारा, दुराचार उनका।
यह संघर्ष सदाचार और अनाचार का है,
प्रकाश और अंधकार का है।

उसने रंगदारी औ' आतंक की गोली मारी है
हम समझदारी औ' शौर्य की गोली मारेंगे।
केवल तभी हम जी पायेंगे
वरना ये गिद्ध हमें नोंचते रहेंगे
लूटते और खसोंटते रहेंगे।
हम सिसकते और कराहते रहेंगे
हम बेमौत मारे जाते रहेंगे
और ये अट्टहास करते रहेंगे।

--- *** ---

नई शताब्दी में राष्ट्रीय समस्याएँ

श्री विजय कुमार
अनु. अधि.

नई शताब्दी के शुभागमन पर युवा पीढ़ी इसका स्वागत करने के लिए अपने-अपने ढंग से पूर्ण तैयारी पर है। साथ ही फिल्मी क्षेत्र, दूरदर्शन पर इसके स्वागत के आलोक में कई प्रोग्राम विभिन्न चैनलों पर विभिन्न स्तर के प्रोग्राम दिये जा चुके हैं।

यूँ तो प्रत्येक वर्ष के आगमन पर नया वर्ष मनाने का दौर पिछले कुछ दशकों से हिन्दुस्तान में प्रचलन-सा हो गया है। इसलिए केन्द्र सरकार तथा क्षेत्रीय सरकार भी इस दिन प्रतिबंधित छुट्टी घोषित करती है।

नई शताब्दी का स्वागत तो करना ही है। इस स्वागत में आनेवाली समस्याओं की ओर ध्यान देना युवा पीढ़ी के लिए कोई मायने नहीं रखता है। उन्हें तो पिछले कई वर्षों के नये वर्ष के आयोजन से कुछ बढ़ कर ही मौजमस्ती मनानी है। नई सदी का शुभागमन हो चुका है। अब हमें इस सदी की कटु-मधु अनुभूति के लिए तैयार रहना चाहिए।

नई शताब्दी की कुछ निम्नलिखित राष्ट्रीय समस्याएँ आनेवाली हैं, तथा कुछ प्रचलन में हैं जो आगे भी रहेंगी:-

(1) **जनसंख्या**- जनसंख्या की समस्या अपने देश की सबसे बड़ी समस्या है। इसकी दर प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है। इस मामले में भारत की क्रम संख्या-2 है। पहली संख्या चीन को जाती है।

निदान- वैसे हमारे देश भारत ने इसके निदान के लिए कई योजनाएँ पारित की हैं, कितने अनुदान दिये गये हैं, कितने नारे दिये गए हैं, किन्तु अफसोस कि हमारी जनसंख्या का अधिकतम अशिक्षित वर्ग इसे अपनाने में अक्षम रहे हैं।

- (1) दो या तीन बच्चे होते हैं घर में अच्छे,
- (2) दो बच्चे वाले सरकारी कर्मचारी को विशेष वेतन,
- (3) बंध्याकरण ऑपरेशन करानेवाले को आर्थिक सहायता,

और भी कई योजनाएँ भारत सरकार द्वारा पारित हैं जिनका कार्यान्वयन भी किया जा रहा है, किन्तु उपलब्धि नहीं के बराबर है। इस मामले में कड़ा रूख अपनाने की आवश्यकता है, जैसे-

- (1) हम दो हमारे एक का नारा और उसका कार्यान्वयन प्रशासनिक स्तर पर
- (2) एक बच्चा के बाद बच्चा पैदा करने पर सरकारी टैक्स प्रत्येक वर्ष।

(2) **स्वास्थ्य एवं पर्यावरण**— बढ़ती जनसंख्या के साथ-साथ कल-कारखाने, मोटर इंजन, कार, बसें इत्यादि जो जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिए आवश्यक है, से पर्यावरण दूषित हो रहा है जिसका सीधा असर हमारे स्वास्थ्य पर पड़ रहा है।

निदान— कल कारखाने, दूषित गैस पैदा करनेवाले, शहर का कूड़ा कर्कट जिससे पर्यावरण दूषित होता है, जनसंख्या वाले क्षेत्र से अलग हट कर होना चाहिए। गंदगी के निस्सारण की तत्काल व्यवस्था होनी चाहिए। ज्यादा धुँआँ पैदा करनेवाली गाड़ी पर आपत्ति जताकर दंड का प्रावधान (वैसे तो है) अमल में लाना चाहिए।

साथ ही स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना के साथ ही स्वास्थ्यकर्ता अपने कार्य को ईमानदारी पूर्वक करें तथा उपयुक्त दवाईयों की पूर्ति भी होते रहनी चाहिए।

(3) **अणुबम और परमाणु बम** — नई शताब्दी में संभवतः तृतीय विश्वयुद्ध की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। इतने अणुबम और परमाणु बम का निर्माण हो चुका है कि अगले सौ वर्षों में उपयोग होगा ही। वैसे अभी से ही तृतीय विश्वयुद्ध की तैयारी में लग गये हैं बड़े-बड़े देश। तृतीय विश्वयुद्ध कहाँ लड़ा जाये इसके लिए जगह की तलाश है, क्योंकि जहाँ से भी लड़ा जायेगा वह जगह ही ज्यादा घाटे में रहेगी।

निदान— वैसे तो सभी देश जो परमाणु/अणु बम धारक है, ने कहा है कि वे प्रथमतः इसका उपयोग नहीं करेंगे किन्तु, इससे समस्या का निदान पूरे तौर पर नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इस पर एक विज्ञप्ति जारी कर कि जो देश इसका प्रथमतः उपयोग करेगा, उसके दंड का प्रावधान अभी से रख दिया जाना चाहिए।

(4) **प्रत्येक हाथ को काम**— जनसंख्या वृद्धि तथा अशिक्षा हमारे देश की प्रमुख समस्या है। जिसके कारण हर हाथ को काम मिलना मुश्किल हो गया है।

इसकी व्यवस्था के लिए तथा स्व रोजगार के लिए सहायता हेतु सरकारी योजनाएँ तो हैं जिन पर अमल की आवश्यकता है।

(5) **अंतर्राष्ट्रीय संबंध**— भारत देश वैसे तो विकासशील देशों की श्रेणी में बहुत ऊपर आ चुका है। किसी मायने में किसी देश से कम नहीं है फिर भी इसे अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध ठीक रखना चाहिए। इसमें अहम की भावना नहीं आनी चाहिए। वैसे भी हमारा देश शांतिप्रिय है। इसका उदाहरण पाकिस्तान द्वारा किये गये आक्रमण, कारगिल युद्ध, शिमला समझौते के अनुरूप कार्य नहीं करना। पाकिस्तान के अड़ियन और अविवेकपूर्ण कार्य के बावजूद भारत का चुप रहना यानी कार्रवाई नहीं करना शांति का ही तो प्रतीक है।

(6) **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार**— किसी भी देश के लिए आंतरिक बाजार को अंतर्राष्ट्रीय बाजार का रूप देना और उसे आमदनी का स्रोत बना लेना बुद्धिमानी ही है। जिसका उत्पादन हमारे यहाँ आवश्यकता से अधिक है उसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेचकर आय की जा सकती है। इसके

लिए आयात/निर्यात तथा अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ से सलाह-मशविरा कर इसे मूर्तरूप दिया जाना चाहिए।

नई शताब्दी में भारत में वही समस्याएँ रहेंगी जो प्रचलन में है अर्थात् जो वर्तमान में है। नई शताब्दी में नई समस्या के रूप में निम्नलिखित समस्याएँ उभरेंगी:-

(1) जनसंख्या विस्फोट

(2) पश्चिमी सभ्यता।

(1) जनसंख्या विस्फोट के लिए कुछ करना अत्यंत आवश्यक है वरना इस नई शताब्दी में आदमी पर आदमी रहेगा, रेलवे बॉगी की तरह। जनसंख्या के बोझ से पृथ्वी दबती जा रही है। आये दिन भूकंप हो रहे हैं जो विनाशकारी दृष्टिगत हो रहे हैं।

कम-से-कम भारत की धरती को जनसंख्या का बोझ नहीं देना चाहिए, अब बहुत हो चुका।

(2) पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण हमारे देश के बड़े शहरों में तो हो चुका है। अब छोटे-छोटे शहरों में भी दस्तक पहुँच गई है। संभवतः गाँव अभी अछूता है।

हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति जो अपने गौरव एवं शालीनता के लिए विश्वविख्यात है, उसका अधोपतन हो जायेगा।

जिस प्रकार सड़कों पर पार्कों में, खास कर होटलों में पश्चिमी सभ्यता में लिप्त रहने की प्रवृत्ति बढ़ रही है उससे भारतीय सभ्यता का पतन निश्चित है।

अंततः, नई शताब्दी में तृतीय विश्वयुद्ध, नैतिक पतन तथा गैर जिम्मेदाराना स्वभाव की स्थिति, मरने-मारने की परम्परा, चोरी, लूट, डकैती, जिसकी लाठी उसकी भैंस की नीति, प्राकृतिक प्रकोप इत्यादि की समस्याएँ भारत में विराजमान रहेंगी। प्रबल आवश्यकता है इसे रोकने के लिए कारगर व्यवस्था करने की अन्यथा भारत का भाग्य जो मात्र नारों पर टिका है, टिका रहेगा।

अतः नई शताब्दी के आगमन के साथ ही भारत के राजनेताओं के साथ-साथ जनता को भी जागना होगा और आनेवाली समस्याओं पर गौर फरमाना होगा और इसके निदान का उपाय कर उसपर अमल करना होगा तथा भारत के उन्नयन और विकास के लिए उन्हें कार्यान्वित करना होगा।

वैसे समस्याओं का अंत नहीं होता है, किन्तु उसमें कमी तो की जा सकती है।

यह नयी शताब्दी विचारणीय है। विचारिये और जागिये।

समस्याओं का हल विधि नहीं करती, मनुष्य करता है।

- एच. मैशक

मौत

श्री शिव शंकर तिवारी
वरिष्ठ लेखाकार

जन्म अगर जीवन की शुरुआत है तो मौत उसका अंत। मौत जहाँ शाश्वत सत्य है वहीं जीवन मिथ्या है।

मेरे विचार में जीवन का अस्तित्वहीन होना ही मौत है। यह अवश्यमभावी है। यह सजीव प्राणी का अंतिम सत्य है। जीवन जीना उसी को रास आया- जिसने मौत को गले लगाया। पुराणों एवं ग्रन्थों के अनुसार मौत तीन प्रकार की होती है-

- 1) आध्यात्मिक मौत,
- 2) आधिभौतिक मौत एवं
- 3) आधिदैविक मौत

1) प्रथम श्रेणी की मौत अटल होती है।

2) आधिभौतिक मौत जो मेडिकल साइंस द्वारा टाली भी जा सकती है तथा

3) आधिदैविक मौत जो देवी-देवताओं एवं तंत्र-विद्या द्वारा ठीक किया जा सकता है।

राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व को पुनर्जीवन मिलना आधिदैविक मौत का ही उदाहरण है।

मौत को विभिन्न रूपों में अनुभव किया जा सकता है। किसी की सामान्य मौत तो किसी

जीव की असाधारण मौत। कोई पीड़ादायी मौत मरता है तो कोई सुखदायी मौत मरता है। एक मौत वह भी थी जो वीर भगत सिंह एवं चन्द्रशेखर आजाद को प्राप्त हुई एवं पीड़ादायी होते हुए भी सुखदायी मानी गई है।

ऊपर व्यक्त की गयी मौत की किस्मों में उच्चश्रेणी की मौत अपनी मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति देना है। उदाहरणार्थ कारगिल युद्ध में भारतीय सीमा पर लड़ रहे सैनिकों का बलिदान।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने उत्कृष्ट मौत को इस प्रकार दर्शाया है-

“मरणो भलो विदेश में, जहाँ न आपनो कोय।

माटि खाये जनावरा, महा महोच्छव होय।”

एक दूसरे शायर ने अपने इस क्रांतिकारी शब्दों में शहीदों की मौत को श्रेष्ठ माना है-

शहीदों के मजारों पर लगेंगे, हर बरस मेले,

वतन पे मरनेवाले का, यही बाकी निशां होगा।

इस प्रकार मेरे विचार में “मौत कुदरत का वह नियत विधान है जो हर सजीव प्राणी को उसके अंतिम क्षणों में प्राप्त होता है।” यह अस्पृश्य एवं अदृश्य विधि है जो नियत रूप में बिना कहे घटता रहता है एवं जिसे किसी भी भौतिक साधनों द्वारा रोका नहीं जा सकता है।

हर सजीव प्राणी मौत के चंगुल में फँसा है जिसे मौत कभी भी निगल सकती है।
अतः पाठकों से मेरी गुजारिश है कि इस शाश्वत सत्य जिसे "भयंकर काली रात" भी
कहते हैं, को दर्दनाक, शर्मनाक एवं खौफनाक न बनायें। वैसा कर्म व व्यवहार अपने जीवन में
न अपनायें जो शर्मनाक हो। अपने जीवन में सदैव सद्गुणों, सद्कर्मों एवं सद्व्यवहारों का आचरण
करें ताकि इहलोक में शांतिमय, सुखमय एवं गौरवमय जीवन जीने के उपरांत अंतिम क्षण में मौत
को हँसकर गले लगा सकें एवं समाज का आदर्श बन सकें।

जिसने देह धारण किया है, उसके प्राण एक न एक दिन
अवश्य जायेंगे।
— ब्रह्मपुराण

कौन हो तुम

राजू कुमार सिंह

लिपिक/प्रशासन-I अनुभाग

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,
उष्ण मधुर बयार हो तुम।
सागर के तम अन्तस्तल में,
सीप मोती श्रृंगार हो तुम।
एकान्त की भूल-भूलैया में,
चिन्तन के आधार हो तुम।
बिखरी हुई यज्ञ सभा में,
एकात्म स्वर के तार हो तुम।
बादल कोई गरज गया तो,
प्रबल वायु प्रतिकार हो तुम।
बिजली कोई चमक गई तो,
शमनकारी जलधार हो तुम।
नैराश्य की तप्त ज्वाला में,
सावन की बौछार हो तुम।
आशा से पूरित कानन में,
जीवन-तत्त्व संचार हो तुम।
उफनती हुई दुःख सरिता में,
माँझी की पतवार हो तुम।
जीवन के बेढब हिचकोलों में,
दृढ़-प्रतिज्ञ सवार हो तुम।

जीवन

- श्री के. एन. शुक्ल

जीवन एक यात्रा है, इसे पूरा करिए,
 जीवन एक चुनौती है, इसका सामना करिए
 जीवन एक कर्त्तव्य है, इसका निर्वाह करिए,
 जीवन एक संघर्ष है, इस पर विजय पाइए।
 इससे जूझना ही कर्म है।

जीवन जीव को दिया हुआ प्रभु का एक नायाब तोहफा है। प्रभु के द्वारा सभी जीवों में मनुष्य का ही जीवन चैतन्य बनाया गया है। बहुत ही आश्चर्य तब होता है जब मनुष्य सभी वस्तुओं/तत्त्वों के रंग (रहस्य) पर विचार कर लेता है, लेकिन वह अपने ही जीवन के सही रंग को देख नहीं पाता। प्रकृति के उतार-चढ़ाव के नियमानुसार प्रायः सभी व्यक्ति को कभी-न-कभी बहुत ही करीब से जिन्दगी को देखने का मौका मिल ही जाता है। जीवन को बहुत करीब से तथा बहुत ध्यान से देखने पर इसके दो रंग दिखाई देते हैं। पहला, वह जो बहुत ही खुशक, नीरस लेकिन कटु सत्य है। इसमें कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे का नहीं होता है और सभी लोग एक दूसरे के सहयोगी होते हैं। जैसाकि किसी संत ने लिखा है—

ना हम काहू क, ना केहु हमार ।

हम हई सभई क, सभई हमार ॥

इस रंग में मनुष्य को यथार्थ एवं सत्य का बोध होता है। साथ ही उसे यह भी बोध होता है कि जीवन एक सत्य तो है लेकिन बे-रंग है। घर में, समाज में, ब्रह्म में, अर्थ में उसे एक ही बात दिखाई देती है कि वह अमुक जगह खड़ा है जबकि उसकी वास्तविक जगह यह नहीं है। वह कर कुछ और रहा है जबकि उसे करना कुछ और चाहिए। वह अपनी दशा मदारी की तरह पाता है तथा अन्त में इसके कारणों की जाँच के लिए अपनी सामाजिक पृष्ठभूमि की तलाश करता है। इस तलाश में जब वह अपने पुरुषत्व पर समाज, परिवेश, वातावरण तथा सहयोगियों को भारी पड़ता देखता है तो वह मायूस हो जाता है। अपने बचाव में किसी को नहीं आता देख कर वह घबड़ा जाता है। ऐसी स्थिति में वह अपने-आपको अपने समाज की अपेक्षा दोषी कम असहाय ज्यादा पाता है। ठीक इसके विपरीत जब वह अपनी पृष्ठभूमि तलाशने के क्रम में अपनी अपेक्षा भी उस परिणति को प्राप्त होता जो 'अमुक' पृष्ठभूमि वालों को मिल जाती है। इन दोनों ही स्थिति में वह अपनी दक्षता, क्षमता, सजगता तथा उपलब्ध साधनों का अधिक-से-अधिक उपयोग कर उस स्थिति को प्राप्त हो जाना चाहता है जहाँ से उसे सब कुछ बौना दिखाई दे। यह रंग अन्य

सभी रंगों से चमकीला एवं टिकाऊ होता है।

जिन्दगी का दूसरा रंग बहुत ही रंगीन, हसीन, आकर्षक, सुख लाल एवं सरल दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अपनी संस्कृति, विकृति, परिणति एवं सत्य को देख नहीं पाता। वह यह भी भूल जाता है कि जिन्दगी के ये हसीन लम्हें बहुत ही कम क्षणों के लिए हैं। ऐसे में व्यक्ति अपना कर्त्तव्य जो उसके मनुष्य होने के नाते उसके साथ जुड़े रहते हैं, या फिर जन्म के नाते उससे जुड़ जाते हैं, या अपनी भूल के चलते प्रायश्चित्त स्वरूप अनिवार्यतः उसे करने पड़ते हैं, या फिर सामाजिक/शारीरिक आवश्यकतानुसार किसी के उपकारों के बदले में करने पड़ते हैं या फिर प्राप्त संवैधानिक शक्तियों के चलते अपने आस-पास मंडराने वाली मौकापरस्त इच्छाओं या व्यक्तियों के लिए निर्वहन करने होते हैं, का निर्वाह करने में मनमानी कर जाता है। इस मनमानी के क्रम में उसे सब कुछ जायज, हसीन, अपने अधिकार क्षेत्र में, दुनिया की नजरों से ओझल लगता है। इस क्रम में उसे यह भी समझ में आने लगता है कि वह ही सबसे ज्ञानी, ध्यानी, शक्तिशाली, प्रभावशाली व विवेकशील है। ये रात रूपी लम्हें मनमानी रूपी रमणियों के साथ कब समाप्त हो जाते हैं, उसे पता ही नहीं चलता। नियति के नियमानुसार जब सत्य रूपी सूरज का उदय होता है तो वह अपने-आपको तथा समाज उसे नंगा पाता है। यही रंग (बदरंग) उसका असली रंग होता है।

जब रंगों की चर्चा होती है तो रंगों के क्रम का प्रश्न अनायास ही उठ जाता है कि कौन-सा रंग पहले देखा जाय? या कौन सा रंग टिकाऊ, बिकाऊ एवं धराऊ है। सचमुच व्यक्ति कितना असहाय हो जाता है कि रंग को पसन्द उसे करना चाहिए, लेकिन करता/करवाता कोई और है। अगर उससे पूछा जाय कि कौन-सा रंग उसे पसन्द है तो इसका उत्तर, उत्तर देने वाले की संस्कृति, सामाजिक परिवेश तथा उसके तथाकथित सहयोगियों एवं मित्रों (मौकापरस्तों) की पसंद के अनुसार मिलता है। लेकिन, रंग का सही रंग एवं क्रम ~~नहीं~~ है जो वह स्वविवेक से देखे और चुने। जहाँ “स्व-विवेक” की बात उठती है वहीं “समय की माँग” की समस्या भी उत्पन्न हो जाती है। अब उस व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह “स्व-विवेक” और “समय की माँग” जो स्व-विवेक को स्वीकार्य नहीं होता है, किसे सर्वोपरि मानता है। क्योंकि, “माँग” आग्रह, पूर्वाग्रह, दुराग्रह से प्रेरित होता है जबकि विवेक पत्थर की वह कसौटी होती है जिस पर घिसने मात्र से ही कठोर से कठोरतम् धातु (मौकापरस्त मित्र) की असलियत का पता चल जाता है। अतएव स्व-विवेक उत्पन्न होने पर ही व्यक्ति को जीवन के सर्वांगीण दर्शन होते हैं। इस स्थिति में दिखाई देने वाली जिन्दगी का रंग सभी रंगों को मात दे देता है।

मानव जीवन लालसाओं से बना हुआ सुन्दर चित्र है। उसका रंग छीनकर उसे रेखाचित्र बना देने से मुझे संतोष नहीं होगा।

— जयशंकर प्रसाद

आइए, अपनाईँ सहस्राब्दी की रीढ़-कम्प्यूटर को

श्री रणजीत कुमार सिंह
सहायक लेखा अधिकारी

मनुष्य के कौतूहल और जिज्ञासा की ब्रचण्डता देखते ही बनती है। इसी कौतूहल और जिज्ञासावृत्ति ने उसे आदम युग से औद्योगिक क्रान्ति तक पहुँचाया और अब संचार क्रान्ति के दौर में संघर्षरत कराया है। आज जिस सहस्राब्दी में हम प्रवेश कर गए हैं उसमें आवागमन तथा सूचना आदान-प्रदान के तीव्रगामी साधन उपलब्ध हैं, अब मात्र कुछ सेकेन्ड में हम विश्व के किसी कोने से सूचना प्राप्त कर सकते हैं। हमारे वैज्ञानिक भी संचार क्रान्ति के जरिए यानी सम्भावनाओं पर शोध कर भारत को मजबूत और उन्नतिशील राष्ट्र बनाने में जुटे हैं। कम्प्यूटर आज इसी संचार युग की रीढ़ है और इसका विस्तार बहुआयामी है। आज कम्प्यूटर के प्रभाव से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। आज की गृहणी वाशिंग मशीन, रेफ्रिजरेटर, माइक्रोवेब ओवन पर निर्भर है, जो कम्प्यूटरीकृत है। एक इन्जीनियर को मकान, पुल और मशीनों के बेहतर डिजाइन एवं सुनियोजित शहर की योजना देने में कम्प्यूटर मदद करता है। वैज्ञानिकों को नई खोज तथा अंतरिक्ष यान नियंत्रण में कम्प्यूटर की आवश्यकता है। लोक सेवा आयोग को परीक्षा के संचालन में विज्ञापन से परीक्षाफल के प्रकाशन तक कम्प्यूटर का उपयोग अत्यावश्यक लगता है। कार्यालयों में टाइपराइटर्स की खटखटाहट के शोर से दूर सुन्दर छपाई सहित पत्राचार तथा फाइलों के बोझ से परे स्वच्छ माहौल कम्प्यूटर प्रदान कर रहा है। आज बच्चे फुटबॉल और क्रिकेट से ज्यादा जिस बिडिओ गेम में रमे रहते हैं वह भी कम्प्यूटरीकृत है। हमारे सिनेमा निर्माता तथा संगीतकार भी इसके मायाजाल में हैं। बेहतर प्रदर्शन और संगीत की होड़ ने इन्हें भी कम्प्यूटर पर निर्भर होने को बाध्य किया है। यही कारण है आज का युग कम्प्यूटर युग बन गया है।

आज के इस संचार क्रान्ति युग का सर्वाधिक पहलू 'इंटरनेट' बना हुआ है। यह विश्वव्यापी कई नेटवर्कों का नेटवर्क है, जिसमें कम्प्यूटर के जरिए लाखों करोड़ों लोग जुड़े रहते हैं। इंटरनेट पर हर विषय, चाहे रोमांस हो या शिक्षा का कोई भी क्षेत्र, अनेकों वेब साइट उस विषय पर दुनियाभर की नवीनतम जानकारी के साथ उपलब्ध हैं। अपनी पसंद के किसी विषय पर तमाम जानकारीयाँ किसी खास वेबसाइट पर प्राप्त कर सकते हैं। वेब साइट के माध्यम से कई कम्पनियाँ, विश्वविद्यालय, स्कूल, सरकारी प्रतिष्ठान, मंत्रालय, विभाग, निजी संगठन, चाहे वह उग्रवादी संगठन ही क्यों न हों, अपनी कार्य प्रणाली की जानकारी तथा नवीनतम सचनाएँ देते हैं। ऐसा ही एक वेब साइट भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का भी है। हाल ही में अपने शहर पटना

की तमाम जानकारीयों सहित 'पटना आन डाट लाइन' के नाम से इंटरनेट पर लाया गया है। सभी प्रमुख टी. वी. चैनल, अखबार या पत्रिका के ताजा अंक का अवलोकन इंटरनेट के माध्यम से कर सकते हैं। आज इंटरनेट तक पहुँच आसान बनाने के लिए महानगरों एवं प्रमुख शहरों में कई साइबर कैफे हैं जो 25-60 रुपये प्रति घंटे की दर से इंटरनेट सेवा प्रदान कर रहे हैं। ऐसे यदि आपके पास टेलीफोन की सुविधा तथा कम्प्यूटर उपलब्ध है तो माडम तथा मल्टीमिडिया उपकरणों की सहायता से दूरसंचार विभाग में आवेदन कर इंटरनेट कनेक्शन घर पर प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम इंटरनेट पर सर्फिंग करने बैठें तो वेब साइटों की अनोखी दुनिया में खो जाते हैं, जहाँ न घर-परिवार की सुध रहती है और न ही कार्यालय या समय की चिंता, चूँकि पल-पल बढ़ती जिज्ञासा से अपने प्रिय विषय पर ज्ञान प्राप्त करने के अथाह भण्डार में हम रमे रहते हैं।

इंटरनेट क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण पक्ष 'ई-मेल' (इलेक्ट्रॉनिक मेल) है। इसके माध्यम से हम कोई भी सूचना, चाहे वह पत्र के रूप में हो, फाइलों का आदान-प्रदान हो या हमारी आवाज, विश्व के किसी भी कोने में जहाँ इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है, चन्द सेकेंडों में भेज सकते हैं। उत्तर भी यदि 'ई-मेल' के जरिए प्राप्त होते हैं तो शीघ्र ही वार्तालाप का क्रम पूरा हो जाता है जो डाक, फैंक्स या फोन के खर्च की तुलना में काफी कम है। यही कारण है कि आज 'ई-मेल' के आगे हमारी डाक सेवा 'स्नेल मेल' (घोंघे के चाल की डाक) बनी हुई है। अभी इस 'ई-मेल' का प्रयोग हमारे कार्यालय में दैनिक खर्च की सूचना मुख्यालय को भेजने में की जा रही है। 'ई-मेल' के तीव्रगामी साधन ने कागज की खफत तथा खर्च कम कर दूरी को इतना करीब कर दिया है, मानों हम एक ही छत के नीचे कई कमरों में रह रहे हों।

इंटरनेट क्रान्ति का एक और पहलू 'ई-कामर्स' के रूप में उभर रहा है। इसके जरिए एक व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर कोई भी वस्तु, चाहे वह मामूली 'पिन' हो या अत्याधुनिक सुविधा सहित मोटर कार, की खरीद एवं भुगतान इंटरनेट के माध्यम से कर सकता है। आज महानगरों में इसका उपयोग आवश्यक सामग्रियों के पूर्ति-हेतु व्यापक रूप से हो रहा है, जिसमें समय की बचत के साथ घर पर ही उनकी प्राप्ति हो जाती है। अर्थात् सब्जी, दूध या अन्य आवश्यक वस्तुओं के लिए सुबह बाजार जाने की जरूरत नहीं है, बस कम्प्यूटर पर माउस क्लीक करके आर्डर पेश किजिए और जुट जाइए अपने नित्यकर्म में, जिसके पूर्ण होने तक सभी माँग की गयी वस्तुएँ आपके दरवाजे पर होती हैं। है न इंटरनेट जादुई चिराग। अपने शहर पटना के अशोक सिनेमा हाल में भी इंटरनेट के माध्यम से टिकट बुक किया जा रहा है। इंटरनेट का विस्तार जिस रूप में हो रहा है आने वाले दिनों में लघु, छोटे और बहुत छोटे बाजार भी विश्व का स्पर्श पाकर आश्चर्यजनक रूप से विस्तृत हो जाएँगे।

परन्तु, "कम्प्यूटर" शब्द सुनते ही हम कर्मचारी अपने छँटनीकरण से भयाक्रान्त होकर कम्प्यूटरीकरण के विरोध में एक जुट होकर नारा लगाते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि हमारा

कार्यालय लेखा एवं हकदारी सम्बन्धी कार्यों का सम्पादन करता है, जिसमें गुणवत्ता का लक्ष्य प्राप्त करने में यही एक महत्वपूर्ण सार्थक साधन है। व्यावहारिक रूप में भारी मात्रा में प्राप्त हो रहे पेंशन तथा पेंशन पुनरीक्षण के मामलों के निष्पादन में हम इसे अनुभव कर रहे हैं। आन्ध्र प्रदेश सरकार की कम्प्यूटर के माध्यम से नियन्त्रित प्रशासन व्यवस्था हमें इसकी महत्ता बताती है और हमारी कम्प्यूटरीकृत रेल आरक्षण व्यवस्था इसकी सार्थकता भी सिद्ध करती है। तो फिर विरोध क्यों? सिर्फ इसलिए कि कई समूहों के कार्य को यह शृंखलाबद्ध तरीके से हमसे ज्यादा सक्रिय होकर चद सेकेंडों में सटीक प्रतिफल देते हुए कार्य का निष्पादन करता है, जिससे हमारे भविष्य का खतरा है- यही धारणा हमें कम्प्यूटर के प्रति आकर्षित नहीं करती है। पर हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि कम्प्यूटर मनुष्य की कृति है। इससे हमें उतनी ही जानकारी मिल सकती है जितनी उसमें डाली गयी है, यह हमारे मस्तिष्क की गतिविधियों के अनन्त एवं बहुआयामी विस्तार को नहीं लाँघ सकती। इसी विश्वास के साथ हमें कम्प्यूटीकरण को स्वीकार करना चाहिए- चूँकि सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारा देश एक शक्तिशाली ताकत बनकर उभर रहा है और यदि हम एक प्रतिष्ठित संवैधानिक संस्थान के कर्मचारी होकर कम्प्यूटर से अनभिज्ञ रहें तो इस क्षेत्र में हमारी उपलब्धि सही मायने में वेमानी होकर रह जाएगी। इसकी उपयोगिता तथा अनिवार्यता देखते हुए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने आगामी नवम्बर 2001 से आयोजित की जाने वाली अनुभाग अधिकारी ग्रेड तथा अधिकारियों के लिए आयोजित प्रोत्साहन परीक्षा में "कम्प्यूटर सिस्टम्स" का एक सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पत्र सम्मिलित करने का निर्णय लिया है। साथ ही इस परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों को प्रशिक्षण देने हेतु देश में सात नए प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने का भी निर्णय लिया गया है, जिनमें एक अपने शहर पटना में भी खोला जाएगा, यह हमारे लिए गौरव की बात है।

जिस तरह दिन-प्रतिदिन हमारा राष्ट्र कम्प्यूटर तकनीक पर निर्भर होता जा रहा है इसमें हमारी जागरूकता नितान्त आवश्यक है। तो आइए विरोध छोड़, हम सहर्ष अपनाएँ कम्प्यूटर को जो इस सहस्राब्दी में वैभव की कुंजी होने जा रही है। अन्यथा आने वाले दिनों में जब टी. वी. चैनलों के साम्राज्य पर, इंटरनेट का कब्जा होगा, कम्प्यूटर जानकारी के अभाव में अपने बच्चों के समक्ष हमें झेंपना न पड़े और आने वाली पीढ़ी हमें सम्पूर्ण साक्षरों की श्रेणी से अलग न रखे।

हम सब एक हैं

श्री अनिल कुमार सिंह
ब० ले०, जी० ई०-16

साथ रहेंगे, साथ चलेंगे
पर, विपत्ति में साथ नहीं।
जहाँ रहेंगे, एक रहेंगे,
कष्टों में हम साथ नहीं।
विपत्ति में स्वयं रहोगे,
खुशियों में अभाव नहीं।
काम करोगे, स्वयं रहोगे,
कामों में हम साथ नहीं।
हम सब भाई एक रहेंगे,
बीमारी में साथ नहीं।
खूब करोगे, खुद लड़ोगे,
अस्पतालों में साथ नहीं।
खून बहाओ, अर्थ लुटाओ,
हम सब तेरे साथ नहीं।
भाषण दोगे, खूब सुनेंगे,
तेरा भला हो, रास नहीं।

भला करोगे, खूब कहेंगे,
मगर तेरे हम, साथ नहीं।
तुम हमेशा साथ रहोगे
हम सब तेरे साथ नहीं।
सहयोगी हो, मान रहे हैं,
पर सहयोग की आस नहीं।
तुम दुनियाँ के साथ चलोगे,
दुनियाँ तेरे साथ नहीं।
तुम दे दोगे, सहर्ष ले लेंगे,
आशा हमसे मान नहीं।
तीन दिवस हो, चार वर्ष हो,
हमने कुछ भी सुना नहीं।
एक दिन, विलम्ब हुआ तो
हमसे कोई बुरा नहीं।
हम तुम्हारे भले दोस्त हैं,
तुम हमारा खास नहीं।

भारतीयता का स्वरूप : मेरी दृष्टि में

सुश्री मीनाक्षी कुमारी

सुपुत्री श्री सिद्धेश्वर प्र० सिंह

भारतीयता का अर्थ है, भारत देश के प्रति प्रेम की उत्कृष्ट भावना। हम भारत के हैं और भारत हमारा है, इसका भावनात्मक प्रेम हम सब भारतीयों के हृदय में निहित हो। भारतीयता का स्वरूप निश्चित रूप से हमारे भारत के स्वरूप पर निर्भर है यानी, जैसा भारत था वैसे भारतीय थे, जैसा भारत है वैसे हम हैं, और जैसा भारत रहेगा वैसे भारतीयता रहेगी।

प्राचीन काल के भारतीयों ने अपनी सुसज्जित एवं समन्वित संस्कृति की छाप दुनिया के हर कोने में छोड़ी थी। तत्कालीन समय में 18 विद्याओं के ज्ञाता, 18 स्वरों से रचित ग्रंथ तथा रहने के पचासों नियमों के अनुयायी इस भारत की धरती पर अकिंचन विचरण किया करते थे, और तब हमें दुनिया के मानचित्र पर पथ-प्रदर्शक के रूप में जाना जाता था और भारतीय की पहचान एक विलक्षण स्वरूप से की जाती थी जिसके साक्षी हमारे पौराणिक ग्रंथ हैं।

समय, परिवेश और परिस्थिति के बदलते चरण से विदेशियों का आक्रमण हुआ और हमारी भारतीयता परतन्त्रता के पाश में आबद्ध सदियों तक सिर्फ साँस लेती रही। समय के थपेड़ों से टूटी और बिखरी हुई हमारी भारतीयता पुनः बीज रूप में प्रस्फुटित हुई। फलतः भारत और भारतीयता के जीर्णोद्धार या यों कहिए कि नव-निर्माण की पहली सीढ़ी पर हमने 15 अगस्त, 1947 को अपना कदम रखा। करीब चार दशकों तक हमारी जो प्रगति हुई वह दुनिया को चौंका देने के लिए कम नहीं है, लेकिन विगत कुछ वर्षों में जो कुछ भी हमने पाया या खोया है वह हम सबों से छुपा हुआ नहीं है। देश वर्तमान स्थिति में आर्थिक, राजनैतिक और नैतिक पहलुओं में तो शिथिल हुआ लेकिन असामाजिक तत्वों का बाहुल्य, मानवीय पक्षों का हास, अनियमित रहने की भावना, कर्तव्य विमुखता, पाश्चात्य शैलियों का अंधाधुन्ध अनुसरण इत्यादि कुछ ऐसे तत्व हैं जिनसे देश में भीतर-ही-भीतर मानों घुन लग गया है। भारत खोखला होता जा रहा है। यदि ऐसी ही स्थिति चलती रही तो भारत का तथा हमारी भारतीयता का क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। अधिकार और कर्तव्य की तो बात करते हैं, उसके लिए लड़ रहे हैं, मर रहे हैं परन्तु कर्तव्य के रूप में हम अपने दायित्व के बारे में सोचते भी नहीं। अगर हम अपनी भावनाओं में इन बातों को पनपने देते हैं तो हमारा भारत और हमारी भारतीयता का स्वरूप कैसा होगा इसकी कल्पना मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं और हमारे भारत और हमारी भारतीयता का स्वरूप उस कगार प

खड़ा दिखाई देता है जिसके आगे अंधेरा और सिर्फ अंधेरा है।

अतः इस समय सबसे बड़ी आवश्यकता हमारे चारित्रिक बल की है। क्षणिक सुख एवं लाभ के लिए हम अपने मानवीय मूल्यों में हास न होने दें। बड़ैमानी की जिन्दगी छोड़ ईमानदारी की जिन्दगी जीएँ और ऐसा कोई काम न करें जो मानवता के सिद्धान्त में कोई विभेद पैदा करे। शिष्टता और विनम्रता हमारी ऐसी हो कि हमें देखकर दूसरे भी शिष्ट और विनम्र हो जाएँ।

जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए आर्थिक साधनों की आवश्यकता है और अर्थ की उपलब्धि मिहनत से ही होती है। अतः हम इतना मिहनतकश बनें कि हमारे भारत का समुचित आर्थिक विकास हो और हम इतने साधन-संपन्न हो जाएँ कि दूसरे हम पर आश्रित हों हम किसी पर आश्रित न हों। हम अपने भारत की सामरिक स्थिति, भू-सम्पदा, मानवबल, उत्कृष्ट ज्ञान, राजनैतिक परिवेश इत्यादि का यदि समुचित लाभ उठावें तो हमारी आर्थिक सम्पन्नता में निश्चित रूप से चार चाँद लग जाएँगे और सोने की चिड़िया कहा जाने वाला अपना भारत सोने का बज्र बन जायगा जिसका प्रयोग समयानुकूल हम करेंगे, वे नहीं करेंगे जो सोने की चिड़िया कहकर इसका तिरस्कार और उपहास करते हैं और हमसे राजनैतिक और आर्थिक दाव-पेंच का मनचाहा खिलवाड़ करते हैं। अतः कर्तव्यनिष्ठा में भारतीयता के इसी स्वरूप की कल्पना भारत को चहुँमुखी विकास के पथ पर अग्रसर कराने में सफल हो पायेगी। हम फिर अग्रदूत बनेंगे और अनुकरण के पात्र बनेंगे।

हमारे भारत में अनेक धर्म, विभिन्न भाषाएँ, विभिन्न जातियों एवं उपजातियों के लोग रहे आ रहे हैं। इन विभिन्नताओं के बावजूद पारस्परिक सहिष्णुता एवं सौहार्द के वातावरण में हम अपनी जिन्दगी गुजारते आ रहे हैं। किन्तु कुछ स्वार्थी एवं महत्वाकांक्षी लोगों के दिग्भ्रमित करने वाली भावनात्मक विचारधाराओं के बहकावे में हम भारतवासी अलग-अलग धर्म, भाषा, जाति, उपजाति, प्रान्त आदि की बात भी करने लगे हैं जिससे हमारे अखण्ड भारत की कल्पना को अक्षुण्ण रखने में संदेह होने लगा है और हमारी भारतीयता का दायरा संकुचित दिखाई पड़ने लगा है। अतः हमारा यह नैतिक दायित्व बनता है कि हम इस घातक संकीर्णताओं को अपने हृदय में न पनपने दें। हम अहर्निश राष्ट्र गौरव का चिन्तन करें और सुसज्जित, समन्वित शुभ कार्यों से देश के गौरव और गरिमा की वृद्धि करें। संकुचित विचारधाराओं को छोड़कर एक शक्ति के रूप में राष्ट्र को आगे बढ़ाएँ। अखण्ड और गौरवशाली भारत की कल्पना को सदैव साकार करने में प्रयत्नशील रहें और अतीत के इस सांस्कृतिक परिस्थिति, परिवेश को भारतभूमि पर स्थापित करें जिससे आकर्षित होकर देवगण भी भारतभूमि की मुक्तकण्ठ प्रशंसा किया करते थे तथा इस भूमि पर जन्म लेने को सदा तरसते रहते थे।

“गायन्ति देवाः विलगीतकानि धन्यास्तुते भारतभूमि भागे।” काश! हमारे भारत का गौरव और उसकी गरिमा वैसी हो पाती और हमें अपनी पहचान में स्वयं भारतीय नहीं कहना पड़ता

बल्कि दुनिया वाले सम्मान भरी नजरों से हमें भारतीय कहते। भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में त्याग और तपस्या, दया और दान, संतोष और शान्ति का महत्वपूर्ण स्थान है। विदेशी संस्कृति के प्रभाव से भारतीय संस्कृति के इन आधारभूत स्तम्भों का स्थान बहुत हद तक भोगवाद और भौतिकवाद ने ले लिया है फिर भी इन आधारभूत स्तम्भों की नींव अभी उखड़ी नहीं है। इसका जीर्णोद्धार कर हम एक ऐसे सुसंस्कृत समाज का निर्माण कर सकते हैं जो पुनः एक बार दुनियावालों को भोगवादी और भौतिकवादी प्रवृत्ति में नया मोड़ देकर मानव मूल्यों को समझने के लिए प्रेरित कर सकता है।

अगर हमारे हृदय में भारतीयता की भावना उत्पन्न हो जाती है तो समष्टि के रूप में राष्ट्र का कल्याण तो होगा ही साथ ही हम भी अनेक प्रकार से लाभान्वित होंगे। हम अपने संकुचित स्तर की सीमाओं को छोड़ कर आगे बढ़ें। अपने हृदय में "आत्मवत् सर्वभूतेषु" और "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे पवित्र आदर्शों को स्थान दें। नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर हों। एक कर्तव्यनिष्ठ और विवेकशील व्यक्तित्व बनावें। त्याग और तपस्या, दया और दान, संतोष और शान्ति को अपने जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दें तो निश्चित रूप से हमारे व्यक्तित्व की छाप दूसरों पर पड़ेगी और सच्चे अर्थों में राष्ट्र के प्रति हमारे इसी व्यक्तित्व का पूर्ण समर्पण ही हमारी भारतीयता का सच्चा स्वरूप होगा।

भारतीयता का आशय 'प्रकाश के मार्ग से अनुष्ठान करने से प्राप्त होने वाली संस्कार-सम्पन्नता' है। भारत यानी भा+रत। 'भा' अर्थात् प्रकाश में, प्रकाश के मार्ग में 'रत' अर्थात् दत्तचित होकर अनुष्ठान करने से जो संस्कार-सम्पन्नता मनुष्य में बढ़ती है, वह भारतीयता है, भारतीय संस्कृति है।

— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

अगर

श्री बंशीधर मिश्र
सं. ले. अधि.

“अगर” एक ऐसी बैसाखी है जो आदमी के कद को छोटा बना देता है। “अगर” के सहारे लोग, जो इसके बहाने जीते हैं, अपनी वर्तमान परिस्थिति/कार्य-क्षमता इन सब बातों को भूलकर लम्बे-लम्बे बखान कर बैठते हैं। अगर मैं ये होता तो ये कर लेता/ देता, अगर मैं वो होता तो वो कर लेता/देता आदि-आदि।

वर्तमान परिस्थिति के साथ-साथ अपनी अन्तर्निहित कार्य-क्षमता को वह भुला बैठता है। वह यह समझने को तैयार ही नहीं होता कि उसमें क्या-क्या गुण/क्षमता छुपी है जिसका उपयोग कर वह बहुत कुछ कर सकता है। समय की इस दौड़ में इस बात को समझ लेने वाला व्यक्ति अपने आप को समाज में एक उदाहरण बनाकर रह जाता है।

मेरी नजर में कई ऐसे उदाहरण समाज में पड़े हैं जिन्हें आदर्श मानकर बहुत कुछ किया/समझा जा सकता है।

मेरे एक मित्र हैं जो पढ़ाई के नाम पर शून्य रहते हुए भी मैट्रिक, इन्टर एवं स्नातक; तीनों परीक्षाओं 38% अंको से ग्रेस की स्थिति में उत्तीर्णता हासिल की। परन्तु, मित्रों की नकल कर अथवा अपनी क्षमता की पहचान कर बैंकिंग की परीक्षाओं में लगातार 14 बार सफलता हासिल की तथा अपनी चाहत के अनुसार आज बैंक में कार्यरत हैं एवं समाज के उन्हें प्रारंभ से जानने वाले लोग जो कभी उन्हें दूसरी निगाह से देखते थे, आज सम्मान की दृष्टि से देखते हैं एवं आदर देते हैं।

मेरे भैया के एक मित्र हैं जिन्होंने किसी तरह बहुत ही साधारण अंकों से कई प्रयासों के उपरान्त मैट्रिक परीक्षा पास की एवं आगे भी मंथर गति से साधारण अंकों से परीक्षा पास की। वे काफी दिनों तक कृषि विभाग में दैनिक वेतन भोगी के रूप में कार्यरत रहे। अपने गुजारे के लिए उनके द्वारा परिचित लोगों के बीच लॉटरी टिकट आदि भी बेचा जाता रहा। इस कार्रवाई ने उन्हें लोगो से बोलने की एवं प्रभावित करने की शैली सिखा दी। अपनी इस शैली की पहचान इन्हें मिलते ही एक साधारण प्रयास से ये बीमा कम्पनी के अभिकर्ता हो गये। आज वे बीमा कम्पनी के विकास पदाधिकारी हैं तथा सारी सुख-सुविधाओं के स्वामी हैं। कलम में इनकी आज भी ताकत नहीं है, परन्तु बात करने/ प्रभावित करने की क्षमता के बदौलत ये अपने अन्य कई काफी तेज-तर्रार रहे दोस्तों से अपनी कैरियर के मामले में काफी बेहतर हैं। सच ही कहा गया है -

चेतना

वक्त की आवाज यही है
वक्त को पहचान ले।
वक्त गुजरने से पहले
वक्त को ही थाम ले।
वक्त देता है दगा न
लोग देते हैं दगा।
वक्त की ही जिन्दगी है
वक्त ही फरियाद है।

अतः आदमी को चाहिए कि वह "अगर" की बैसाखी को न थामकर वक्त की बैसाखी को थामते हुए अपनी क्षमता के अनुरूप/वर्तमान परिस्थिति के अनुरूप यह सोचे कि वह क्या-क्या इस समाज/परिवार/खुद के लिए कर सकते हैं। ऊँचाई का कोई अन्त नहीं है। नीचे देखने पर ही आदमी को अपनी ऊँचाई का अहसास होता है और ऊपर देखने पर अपने नीचे होने का।

अतः आदमी को "अगर" की सोच को त्याग कर वर्तमान परिस्थिति में ही सोचना चाहिए कि मैं ये हूँ तो मैं क्या-क्या कर सकता हूँ। निश्चित ही अपने अन्दर छुपी क्षमता को वह समय से पहचान ले तो उसकी "अगर" मैं वो...." वाली सोच भी सार्थक होगी।

--- ** ---

अपनी पहुँच बिचारिकै, करतब करिये दौर ।

तेते पाँव पसारिये, जेती लांबी सौर ॥

- वृन्द

आज की परिधि में रहना सीखें

श्री भगीरथ लाल दास

वरिष्ठ लेखाकार

सन् 1976 की बात है। मैंने एक पुस्तक पढ़ी। उसके एक वाक्य ने मेरे भविष्य को अत्यन्त प्रभावित किया। उस समय मैं भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी में लगा था। मुझे बहुत चिन्ता थी कि इस परीक्षा में कैसे सफलता प्राप्त करूँ। क्या करें? कहाँ जाएँ? अन्त में सफलता प्राप्त करने में कामयाब नहीं हो सका। पुनः मैं बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी करने लगा लेकिन दुर्भाग्यवश मैं इसमें भी असफल रहा, क्योंकि कुछ-न-कुछ घर की परेशानी आ जाती और मैं परीक्षा में बैठ नहीं पाता। मेरी हार्दिक इच्छा यही थी कि मैं कोई प्रशासक बनूँ। ऐसी कई चिन्ताएँ मुझे घेरे रहती थीं। अन्त में इतना हतोत्साह हो गया कि तृतीय वर्ग की नौकरी करने की इच्छा हुई लेकिन निराशा ही निराशा हाथ लग रही थी। जब मैंने उस वाक्य को पढ़ा तब काफी शान्ति मिली, वह यह था कि “दूरस्थ तथा संदिग्ध कार्यों को छोड़, सन्निकट एवं निश्चित कार्यों को हाथ में लेना ही हमारा मुख्य ध्येय होना चाहिए।” इसके बाद कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा में बैठा एवं मेरी नियुक्ति लिपिक पद पर हुई लेकिन फिर भी अपने अन्दर कुछ कमी महसूस करता रहा परन्तु पहले से काफी शान्ति मिली।

इस सफलता का रहस्य क्या था? वह था— “आज की परिधि में रहना”। इस सूत्र का आखिर आशय क्या है? हम अपने आप पर नियन्त्रण रखना सीखें जिससे कि हम ‘आज की परिधि’ में रह सकें और हमारी जीवनयात्रा सुरक्षित हो जाए। बीती हुई घटनाएँ एवं अज्ञात भविष्य को लौह कपाटों में जड़ दें। जीवन के प्रत्येक स्तर पर इस सूत्र का प्रयोग करें और हमें विदित होगा कि आज के लिए हम सर्वथा सुरक्षित हैं। हम अपनी दिनचर्या ईसा की इस प्रार्थना के साथ आरम्भ करें— “हे प्रभु केवल आज का भोजन जुटा दे।” यह ध्यान देने योग्य है कि यह प्रार्थना केवल आज के भोजन के लिए ही है इसमें कल की बासी रोटी की शिकायत नहीं है, न इसमें यही कहा गया है कि “हे प्रभु यदि सूखा पड़ गया तो आगामी पतझड़ में रोटी कहाँ से नसीब होगी या कहीं रोजी जाती रही तो मेरा भरण-पोषण कैसे होगा?”

इस प्रार्थना में केवल आज की रोटी की ही याचना है इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। आज की रोटी ही हमारी अपनी है।

मेरे जीवन की उक्त घटना की उल्लेखनीय बात यह है कि यदि मुझे चिन्ता करने की मूर्खता का भान नहीं हुआ होता और “आज की परिधि” में रहना न आया होता तो मैं भारतीय प्रशासनिक सेवा एवं बिहार लोक सेवा आयोग के विषय में ही सोचते-सोचते स्नायु रोग से पीड़ित हो जाता और इस योग्य न रहता कि लिपिक की नौकरी कर पाता। वर्तमान में शिक्षित नवयुवक

से मेरा अनुरोध है कि वे वर्तमान में रहें भूत को भूल जाएँ और भविष्य की योजना बनाएँ लेकिन उसके लिए चिन्तित न हों। ऐसा न करने पर वे आँत उत्पटने (Spasmodic Transverse) अथवा अन्य स्नायु रोग (Nerves Disease) से पीड़ित हो जायेंगे और अपना जीवन नष्ट बना लेंगे।

मानव प्रकृति की अत्यन्त शोचनीय प्रवृत्ति यह है कि हम वस्तुस्थिति से पलायन कर जाते हैं। अपने गवाक्ष के बाहर इठलाते उन विकसित पुष्पों के सौन्दर्य की उपेक्षा करके हम अन्तर्गर्भ के काल्पनिक नन्दन वन में खो जाते हैं। ईसा से तीन सौ वर्ष पूर्व रोमन कवि होरेस ने लिखा है जो निम्नलिखित है:-

“सुखी मानव तो वही है
आज को अपना बना ले,
और हो आश्वस्त कह दे
जी लिया बस आज मैं तो
'कल' जो करना हो तू कर ले।”

आखिर हम ऐसी मूर्खता क्यों करते हैं? इतने दयनीय एवं मृदु हम क्यों बन जाते हैं?

हमारे जीवन की यह छोटी शोभा यात्रा भी कितनी विचित्र है! आज का काम कल पर छोड़ दिया जाता है। बालक कहता है कि किशोर होने पर देखा जाएगा, किशोर युवावस्था की प्रतीक्षा करता है और युवा बनने पर कहता है गृहस्थ बनने पर देखेंगे और तबतक विचार बदल जाता है। सोचता है, गृहस्थ हो गया तो क्या हुआ पहले सांसारिक झंझटों से निपट लूँ तब देखूँगा। और जब कामकाज से छुट्टी मिल जाती है तब वह अपने अतीत पर दृष्टिपात करता है और उसे लगता है जैसे अतीत पर पाला पड़ गया हो, सब कुछ समाप्त हो गया हो, और तब कहीं जाकर इतने विलम्ब के बाद उसे जीवन के प्रत्येक पल के पूर्ण दोहन में जीवन की सार्थकता का भान होता है।

मैंने यह जानने के पूर्व कि प्रत्येक पल का पूर्ण दोहन ही जीवन की सार्थकता है, चिन्ता में पड़कर अपने को अधमरा बना लिया था। निर्धनता में पले मैंने ट्यूशन पढ़ाकर जीविकोपार्जन का श्रीगणेश किया था। फिर प्राइवेट चीनी मिल में टंकक के रूप में काम किया। पुनः श्रीकृष्णापुरी स्थित मैथिली अकादमी के कार्यालय में सहायक के पद पर काम किया। उसके उपरान्त सात कटुम्वियों के पोषण का दायित्व निभाते हुए, वरिष्ठ लेखाकार के रूप में कार्य करते हुए हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

मैंने भारत के प्रसिद्ध नाटककार कालिदास की कविता अपने मन प्राण में बसा रखी है—
उपा अभिनन्दन :—

“आज का स्वागत करा!
यही जीवन है। जीवन का सार है।
मानव अस्तित्व की सभी विविधताएँ,
वास्तविकताएँ, इसी में निहित हैं।
इसमें विकास का वरदान है
कर्म का माहात्म्य है और सिद्धि का वैभव है
भूत सपना है और भविष्य कल्पना।
सुखद वर्तमान से ही भूत के सुखद स्वप्न की सृष्टि होती है
और आने वाला कल आशामय बन जाता है।”

इसलिए, हम आज का प्रेम से स्वागत करें। यही उपा के प्रति हमारा अभिनन्दन है।

चिन्ता से मुक्ति पाने के लिए एवं जीवन से इस परे रखने के लिए भूत और भविष्य को लौह कपाटों में जड़ दें और “आज की परिधि” में रहना सीखें।

— * —

जो नहीं दे सका कोई

श्री चन्द्रिका सिंह
व.ले.

जो नहीं दे सका कोई
वह दे दिया आपने,
प्राण में प्रेरणा भाव-संवेदना
बुद्धि को श्रेष्ठ चिन्तन दिया आपने।

जो नहीं दे सका कोई....
वह दे दिया आपने।

अन्यथा प्राण रहते भी,
निष्प्राण थे,

पूज्यवर वह अनुग्रह किया आपने।
आपने तप किया,
पुण्य हम सभी को दिया।
आपने दिव्य अहसान
हमपर किया !!

विधाता तू हमारा है
तू ही विज्ञान दाता है
जो नहीं दे सका कोई
वह दिया आपने।

हिन्दी पखवाड़ा

(हिन्दी कक्ष)

महालेखाकार (ले० एवं ह०)-II, बिहार, पटना एवं महालेखाकार (ले०प०)-I, बिहार, पटना कार्यलय के संयुक्त तत्वावधान में गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 1.9.2000 से 15.9.2000 तक "हिन्दी पखवाड़ा" वर्ष, उमंग और उत्साह के साथ मनाया गया। विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, पुरस्कार प्रदान किये गए तथा कवि-गोष्ठी भी आयोजित की गई। दिनांक 14.9.2000 को "हिन्दी दिवस" भारत के नियंत्रक-महालेखा परीक्षक की ओर से प्रेषित "संकल्प" के साथ श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

दिनांक 01.9.2000 को श्री नन्दलाल, महालेखाकार (ले०प०)-I, बिहार, पटना की अध्यक्षता में श्री अरुण कुमार सिंह, महालेखाकार (ले० एवं ह०)-II, बिहार, पटना ने अपने कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी पखवाड़ा समारोह का विधिवत उद्घाटन किया। श्री खालिद बिन जमाल, उपमहालेखाकार (प्रशासन), बिहार, पटना ने स्वागत भाषण किया। श्री अरुण कुमार सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में हिन्दी को कार्यलय की प्रभावशाली भाषा बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इस शुभ अवसर पर कार्यलय की ओर से "हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी" आयोजित की गई। माननीय मुख्य अतिथि श्री अरुण कमल, जो बिहार के एक सुविख्यात हिन्दी कवि हैं, के कर-कमलों द्वारा कार्यालयीय त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका "चेतना" के द्वादश अंक का विमोचन किया गया। समारोह के अध्यक्ष श्री नन्दलाल ने अध्यक्षीय भाषण किया जिसमें उन्होंने दोनों कार्यलय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पूरे संकल्प के साथ हिन्दी में शत-प्रतिशत कार्य करने की प्रेरणा दी। इस दिन साहित्यिक गीतों का गायन भी किया गया जो बहुत रोचक था। अन्त में श्री संदीप लाल (उपमहालेखाकार, लेखापरीक्षा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी पखवाड़ा समारोह का पहला दिन समाप्त हुआ।

दिनांक 2.9.2000 एवं 3.9.2000 को क्रमशः शनिवार एवं रविवार रहने के कारण कार्यलय बन्द था।

दिनांक 4.9.2000 एवं 5.9.2000 को 2.30 बजे अपराह्न से 4.30 बजे अपराह्न तक संयुक्त हिन्दी कार्यशालाएँ चलायी गईं जिनमें "हिन्दी की सामान्य अशुद्धियाँ एवं शब्दों का सही प्रयोग" तथा "संक्षेपण, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन" पर प्रकाश डालते हुए लेखा कार्यलय के 13 तथा लेखापरीक्षा कार्यलय के 12 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

दिनांक 6.9.2000 को 2.30 बजे अपराह्न में "भाषण प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें लेखा एवं लेखापरीक्षा कार्यलयों के 10 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। भाषण प्रतियोगिता के लिए निम्नलिखित विषय रखा गया था:-

“राजभाषा हिन्दी का स्वर्ण जयन्ती वर्ष”।

दिनांक 7.9.2000 को “कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण प्रतियोगिता” आयोजित की गई थी जिसमें लेखा एवं लेखापरीक्षा कार्यालयों के छः अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 8.9.2000 को “हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता” का आयोजन किया गया था जिसमें दोनों कार्यालय के कुल मिलाकर 45 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया था।

दिनांक 9.9.2000 एवं 10.9.2000 को क्रमशः शनिवार तथा रविवार रहने के कारण कार्यालय बन्द था।

दिनांक 11.9.2000 को अपराह्न 2.30 बजे “स्वरचित हिन्दी काव्य-पाठ प्रतियोगिता” का आयोजन किया गया जिसमें दोनों कार्यालय के दस अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लेकर कविता-पाठ किया।

दिनांक 12.9.2000 को 2.30 बजे अपराह्न में “हिन्दी संक्षेपण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता” आयोजित की गई जिसमें दोनों कार्यालय के 37 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लेकर प्रतियोगिता में अपनी अभिरुचि जाहिर की।

दिनांक 13.9.2000 को 2.30 बजे अपराह्न में “हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता” का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में दोनों कार्यालय के 29 अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

दिनांक 14.9.2000 को “हिन्दी दिवस” मुख्य समारोह के रूप में काफी हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वन्दना से की गई। इस दिन मुख्यालय की ओर से प्रेषित “संकल्प” को कार्यालयाध्यक्षों के साथ सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पढ़कर संकल्प लिया। माननीय गृह मंत्री के संदेश का वाचन किया गया। इस दिन मुख्य अतिथि के रूप में बिहार के सुप्रसिद्ध कवि श्री मदन कश्यप जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में बिहार के सुविख्यात समालोचक डॉ॰ खगेन्द्र ठाकुर जी ने “हिन्दी दिवस” के उपलक्ष्य में सारगर्भित भाषण किये। दोनों कार्यालय के हिन्दी अधिकारियों ने अपने-अपने कार्यालय का वार्षिक हिन्दी प्रगति प्रतिवेदन पढ़ा। दोनों कार्यालय के महालेखाकारों ने भी अपने-अपने उद्गार में कार्यालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं उसके उत्तरोत्तर विकास पर बल दिया। इस दिन गायन-वादन कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था। दोनों कार्यालय के कर्मचारियों ने अपने मर्मस्पर्शी गायन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दिन राजभाषा हिन्दी स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में वार्षिक कार्यक्रम के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल प्रतियोगियों को माननीय महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह जी के कर-कमलों से पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। वस्तुतः समस्त कार्यालय हिन्दी महोत्सव के असीम आनन्द से सराबोर था।

दिनांक 15.9.2000 को “हिन्दी पखवाड़ा” समारोह के समापन का दिन था। इसे दो

चरणों में मनाया गया। प्रथम चरण में श्री संदीप लाल, उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना द्वारा अधिकारियों/कर्मचारियों एवं अतिथियों का स्वागत किया गया। माननीय महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह ने राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने भावोद्गार व्यक्त किये। मुख्य अतिथि के रूप में श्री राम उपदेश सिंह, सेवा निवृत्त भारतीय प्रशासकीय सेवा ने हिन्दी के सम्यक् विकास पर बल दिया। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री नन्दलाल, महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-I, बिहार, पटना ने राजभाषा हिन्दी के प्रगति हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिये। तदुपरान्त उनके ही कर-कमलों से "हिन्दी पखवाड़ा" के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही लेखा कार्यालय में हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करनेवाले 33 अधिकारियों/कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया।

समारोह के द्वितीय चरण में मार्मिक कवि-गोष्ठी आयोजित की गई। सबों ने इस कवि-गोष्ठी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस कवि-गोष्ठी में पटना के प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कवियों के अतिरिक्त दोनों कार्यालय के कवियों ने भी भाग लेकर अपनी-अपनी कविताओं से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

अन्त में श्री आर. प्रसाद, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। उमंग एवं उल्लास के वातावरण में तालियों की गूँज से "जय भारत, जय हिन्दी" के नारे के साथ "हिन्दी पखवाड़ा" का समापन किया गया।

हिन्दी भारत की प्राण-शिखा
हिन्दी जन-जन की भाषा है
यह देश प्रेम की अमर ज्योति
सम्पूर्ण राष्ट्र की आशा है ।

--- ** ---

हिन्दी ही हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का सबसे शक्तिशाली और प्रधान माध्यम है। यह किसी प्रदेश या क्षेत्र की भाषा नहीं, बल्कि समस्त भारत की 'भारती' के रूप में ग्रहण की जानी चाहिए।

— कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी



स्वाधीनता दिवस, 2001 के पावन अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में हारमोनियम बजाते हुए श्री आर. पी. चक्रवर्ती तथा देशभक्ति गीत गाती हुई सुश्री स्वाति सुपुत्री श्री वनवीर सिंह ।



हिन्दी पखवाड़ा समारोह, 2000 में आयोजित कवि गोष्ठी में तत्कालीन महालेखाकार श्री अरुण कुमार सिंह कविता पाठ करते हुए । साथ में हैं श्री मदन कश्यप, प्रसिद्ध हिन्दी कवि ।



माननीय महालेखाकार श्री राकेश कुमार वर्मा 55वें स्वाधीनता दिवस के शुभ अवसर पर सलामी गार्ड का निरीक्षण करते हुए ।



स्वाधीनता दिवस की 54वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेते हुए कार्यालय के कलाकारवृन्द श्री हरिलाल दास एवं श्री आर. पी. चक्रवर्ती ।